ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 12 अंक 4 कुल पृष्ठ-8 17 से 23 अगस्त, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 भा. कृ.-10

राष्ट्र निर्माण के लिए युवा निर्माण जरूरी

देश की समस्त आर्य समाजों में युवाओं को संस्कारित करने का विशेष अभियान चलाया जाये

– स्वामी आर्यवेश

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अमेरिका से भेजे अपने सन्देश में देश के गिरते चरित्र तथा युवाओं के नैतिक पतन पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए युवाओं को संस्कारित करने पर बल दिया।

ज्ञातव्य हो कि स्वामी आर्यवेश जी इन दिनों अमेरिका में गहन वेद प्रचार का कार्य कर रहे हैं। अमेरिका के विभिन्न नगरों में आयोजित कार्यक्रमों में वे आर्य समाज तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं। अगस्त के अन्तिम सप्ताह में वे स्वदेश वापस आयेंगे।

उन्होंने कहा कि युवा शक्ति का नाम सुनते ही मन में एक प्रश्न उभरकर सामने आता है कि क्या इस शक्ति में कोई महान शक्ति छुपी है। विश्व के इतिहास पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो आदिकाल से अब तक किसी भी राष्ट्र, जाति व धर्म ने जो प्रगति की है उसमें युवकों की भूमिका सबसे आगे मानी गई है। क्योंकि यौवन का सुनहरी अवसर होता है। जीवन में यह यौवन एक भूचाल-सा लेकर आता है। इसमें युवक अपनी सीमित शक्ति होते हुए भी असीमित काम करना चाहते हैं और इस यौवन अवस्था के अवसर पर यदि सही गुरु की प्रेरणा और ब्रह्मचर्य का संयोग हो जाए तो फिर कहना ही क्या है।

युवा शक्ति का उपयोग लेना इस समय के समाज और राष्ट्र की व्यवस्था पर निर्भर करता है। यदि युवकों को सही दिशा नहीं मिलती है तो वह दिशाभ्रमित होकर भौतिकवादी चकाचौंध के चक्कर में शराब, सिगरेट, सिनेमा, वैश्यागमन को सर्वसुख समझकर उन्हें प्राप्त करने के लिए रिश्वत, भ्रष्टाचार तथा अन्य भ्रष्ट तरीके से धन प्राप्ति के लिए अपनी शक्ति का अपव्यय करने में जुट जाता है। जो युवक उक्त कार्य पर चलता है वह युवा अवस्था प्राप्त करने से पहले ही बूढ़ा हो जाता है। उसे जीवन में निराशा व अन्धेरा दिखाई देता है।

यदि उसी नौजवान को वैदिक मान्यताओं के आधार पर चरित्र और देशभक्ति की प्रेरणा दी जाये तो वह यौवन लगाकर समाज और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका अदा कर सकता है। विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिन महानुभावों ने सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक परिवर्तन किये हैं वह युवा अवस्था में ही किये हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन दास प्रथा का कलंक मिटाकर 56 वर्ष की आयु में दुनिया से विदा हो गये, रूस की बोल शेवक क्रान्ति के अग्रदूत लेनिन 54 साल की उम्र में संसार से चले गये। विश्व का सबसे बड़ा तानाशाह हिटलर भी 55 साल की आयु में खाली हाथ चला गया। नस्लवाद के खिलाफ संघर्ष करने वाले अमेरिका के मार्टिन लूथर शान्ति पुरस्कार प्राप्त कर 39 वर्ष की आयु में शान्त हो गये। अशोक माहन भी 41 साल तक ही पृथ्वी पर रहे, स्वामी दयानन्द 59 साल की आयु में विषपान कर गये, रामप्रसाद बिस्मिल 31 वर्ष तथा सरदार भगत सिंह 24 साल की आयु में फांसी का फन्दा चूम गये। चन्द्रशेखर आजाद ने 25 वर्ष की आयु में स्वयं को गोलीमार कर शहादत प्राप्त की, सुभाषचन्द्र बोस आजादी की लड़ाई लड़ते हुए 48 वर्ष की आयु में रुपोश हो गये, ईसामसीह मात्र

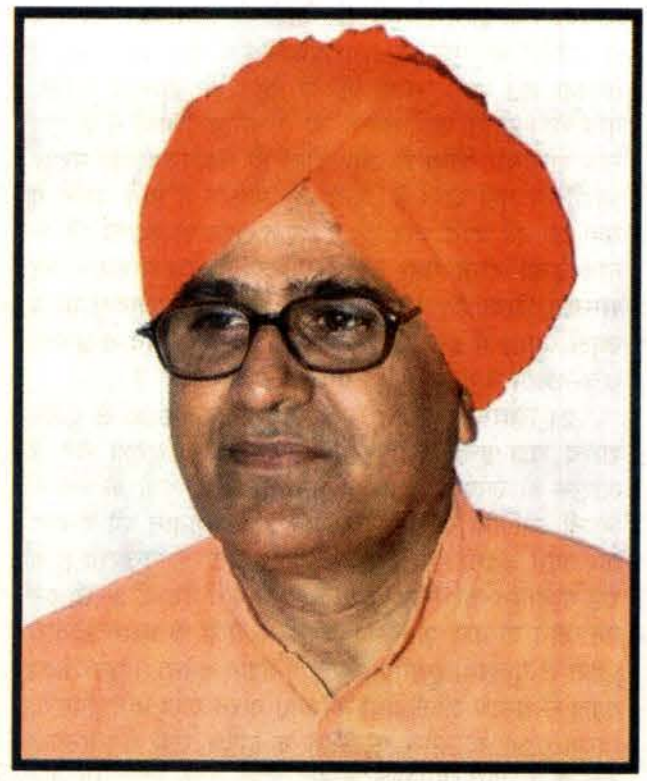

33 वर्ष की आयु में सूली पर चढ़ा दिये गये। विश्व विजय का स्वप्न देखने वाला नेपोलियन वोनापार्ट भी 52 साल की आयु में सेन्ट हेलेना जेल में मौत के ग्रास बन गया। इनके अतिरिक्त सैकड़ों युवा पुरानी रुढ़ियों को समाप्त कर नूतन समाज का निर्माण करके इस पृथ्वी से परलोक सिधार गये। संसार में जो भी परिवर्तन व निर्माण किया है, युवाओं ने ही किया है।

आज हमारा युवा भौतिकवाद की आंधी में इतना अन्धा हो गया है कि वह भूमाफिया, शराब माफिया, ड्रग माफिया, महिला तस्करी, राहजनी, डकैती, हत्याएं, अश्लील साहित्य विक्रय तथा अन्य पदार्थों की स्मगलिंग से धन कमाने में इतना व्यस्त हो गया है कि उसके मन में राष्ट्र व समाज निर्माण का विचार ही नहीं आता। ऐसे नौजवानों को आज के भ्रष्ट सत्तासीन राजनीतिज्ञों का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त है। जिसके कारण युवा राष्ट्र निर्माण के स्थान पर समाज में अराजकता फैला रहा है। आज चुनावों में धन बल और बाहुबल द्वारा गुंडा तत्व हावी होता जा रहा है। राजनीति का पूर्ण अपराधीकरण हो चुका है। ऐसी स्थिति में राष्ट्र निर्माण कैसे सम्भव हो सकता है?

राष्ट्र निर्माण के लिए जहाँ एक तरफ सड़क, बिजली, भवन, कारखाने, कम्प्यूटर, कार, मोटर, रेल, हवाई जहाज बनाना जरूरी है। उससे भी जरूरी युवा निर्माण करना है। युवा निर्माण के बिना राष्ट्र निर्माण का स्वप्न अधूरा है। युवा निर्माण ही राष्ट्र निर्माण की प्रथम सीढ़ी है।

अब सवाल पैदा होता है कि युवा निर्माण कौन और कैसे करें? वेद में एक श्लोक आया है - मातृमान, पितृमान, आचार्यवान् पुरुषोवेद।

बच्चे का निर्माण सर्वप्रथम माता-पिता और गुरु अर्थात आचार्य के द्वारा होता है। आचार्य जैसा चाहे वैसे बच्चों का निर्माण कर सकता है। आचार्य राष्ट्र के लिए डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, राजनेता, अभिनेता सब तैयार करता है। यह वह कार्यशाला है जहां युवाओं के चरित्र को तराशा जाता है। सच ही कहा कि एक डॉक्टर की लापरवाही से एक रोगी मर जाता है। इंजीनियर की लापरवाही से किसी बिल्डिंग या पुल गिरने से कुछ लोगों की जान चली जाती है परन्तु आचार्य की लापरवाही से पूरा राष्ट्र मर जाता है। आज यही हो रहा है। गुरु अपने दायित्व से विमुख हो चुके हैं। गुरुओं का जीवन आदर्श न होकर सामान्य होता जा रहा है।

जो काम गुरुओं को करना चाहिए वह कार्य आज आर्य समाज कर रहा है। आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, आर्यवीर दल, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, आदि संगठन युवाओं के निर्माण का कार्य वर्षों से कर रहे हैं। इन्होंने अपने प्रयासों से लाखों युवाओं को संस्कारित किया जो देश तथा समाज की सेवा मनोयोग से कर रहे हैं। लेकिन इतना कार्य पर्याप्त नहीं है। सारे देश की आर्य समाजों में युवाओं को संस्कारित करने के लिए विशेष कार्यक्रम बनाये जाने चाहिए। क्योंकि आज सबसे बड़ी चुनौती युवाओं को सन्मार्ग पर लाने की तथा अपनी संस्कृति को बचाने की है। अतः मैं निवेदन करना चाहूँगा कि यदि राष्ट्र का सही निर्माण करना है तो राष्ट्रीय स्तर पर तथा सामाजिक स्तर पर युवा निर्माण किया जावे इससे राष्ट्र का निर्माण स्वतः हो जायेगा।

इस कार्य को करने के लिए समस्त आर्य समाजों को मिलकर सम्पूर्ण राष्ट्र में एक विचारधारा को लेकर कार्य करना होगा। प्रत्येक आर्य समाज में नियमित रूप से युवाओं को संस्कारित करने के लिए शिविर आदि लगाने चाहिए। अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, आदर्श गृहस्थ, सोलह संस्कार, त्याग, तपस्या, ईश्वरभक्ति आदि विषयों पर युवा शक्ति को गम्भीरता से बताना होगा। विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर एकजुट होकर, एक विषय को लेकर सार्वजनिक प्रदर्शन करने होंगे। मीडिया विशेषकर इलेक्ट्रानिक मीडिया के द्वारा जन-जन तक वैदिक संदेश पहुंचाने होंगे। छोटी आयु के बच्चों में हम जैसे संस्कार डालेंगे उनका भविष्य व व्यक्तित्व वैसा ही बन जायेगा। बच्चों को, युवाओं को ईमानदारी, परोपकार, नैतिकता, सेवाभाव एवं समर्पण आदि गुणों से ओत-प्रोत करना आर्य समाज का मुख्य कार्य होना चाहिए। हमारे युवा जब ईश्वरभक्ति, गुरुभक्ति, मातृ-पितृ भक्ति एवं देशभक्ति के गुणों से ओत-प्रोत होंगे तो देश का निर्माण स्वयं हो जायेगा। युवाओं को संस्कारित करने तथा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आन्दोलनात्मक रास्ता अपनाकर तथा उन समस्याओं जिनसे आम जनता त्रस्त है तथा पेरशान है उन मुद्दों पर कार्य करके हम सब राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। तो आइये! हम सब मिलकर युवाओं को संस्कारित करें तथा आदर्श राष्ट्र बनाने तथा भारतीय संस्कृति को बचाने में अपना योगदान प्रदान करें।

- प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-2

सम्पादक - प्रो. विद्दलराव आर्य

दयानन्द मठ चम्बा के वार्षिक उत्सव व दुर्लभ शारद यज्ञ का सन्देश व निमन्त्रण

– आचार्य महावीर सिंह

धर्मप्रेमी सज्जनों ईश्वर की अपार अनुकम्पा से, दिवंगत पूज्य चरणों के निरन्तर प्रवाहित होने वाले आशीर्वादों के फलस्वरुप, और आप सभी हितैशियों के सहयोग व मंगलकामनाओं के कारण ही पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज की साधना स्थली दयानन्द मठ चम्बा अपनी जनकल्याणकारी गतिविधियों को जारी रखे हुए है। गुरुजनों व प्रिय पुत्र के आकस्मिक महा गमन से यहां के कार्यों को धक्का तो लगा, झटका तो लगा, पर यहां के काम रुके नहीं। पूज्य स्वामी जी के समय में इन कार्यो में जिस प्रकार की गतिशीलता थी वह गतिशीलता अब बेशक नहीं, पर चल तो रहे हैं। वह आकर्षण, वह प्रभाव बेशक इन कार्यों का न हो, जो पूज्य स्वामी जी के रहते हुए होता था, पर हमने उन्हें जारी तो रखा हुआ हैं। पूरी निष्ठा व आस्था से, प्राणार्पण से जारी रखा हुआ है। कहां राजा भोज कहां गंगू तेली। स्वामी जी तो स्वामी जी थे पर मेरा निर्माण भी तो उन्होंने ही किया। उन्होंने ही इसे सजाया, संवारा, मिट्टी से माधो बनाया। मेरे जीवन पर उन्हीं का अक्ष है। इसीलिए उनके बाद जो कुछ भी कर पा रहा हूँ, वह सब उन्हीं के आशीर्वाद से कर पा रहा हूँ। आज भी ऐसा लगता है, जैसे उन्हीं के दिशा निर्देश में काम कर रहा हूँ। सूर्य के अस्ताचल को चले जाने पर चन्द्रमा, जो कि सूर्य से ही रोशित है सूर्य के कार्य को आगे बढ़ाता है। संसार को रोशनी देता हैं। बेशक वह रोशनी मन्द ही क्यों न हो प्रकाश तो देता है। मेरा कार्य, मेरा प्रयास भी उसी प्रकार का है।

मकसद हैं मेरा रोशित रहें काम उनके
प्रकाश पुंज न सही करुं यत्न जुगनू बनकर
जीवन है उनका यह तन मन है उनका
निभाऊं फर्ज अपना भक्त हनुमान बनके

पूज्य स्वामी जी को परोपकार के कार्य बहुत प्रिय थे। परोपकाराय सतां विभूतयः उनका भी सारा का सारा जीवन दूसरों के दुखः–दर्दो को मिटाने में ही बीता। उसी प्रकार के कार्य कलापों को जीवन में करते रहें। परोपकार का सबसे बड़ा साधन यज्ञ है। जब से यह ज्ञान उन्हें हुआ, तब से वे यज्ञों के प्रति समर्पित हो गए। बड़े–बड़े यज्ञों का अनुष्ठान उन्होंने किया। विभिन्न प्रकार के यज्ञों को भी करते रहें। उन यज्ञों में भी ऋग्वेद में निर्दिष्ट दुर्लभ शारद यज्ञ उन्हें बहुत प्रिय था। क्योंकि राष्ट्र के स्वाभिमान को जगाने के लिए यह यज्ञ किया जाता है। राष्ट्र के गौरव को बढ़ाने के लिए यह यज्ञ किया जाता है। देश में क्षात्र शक्ति की वृद्धि हो, इसलिए यह यज्ञ किया जाता है। वेद भगवान की– ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हो द्विजब्रह्म तेज धारी क्षत्री महारथी हों अरि दल विनाशकारी––।। इस भावना की पूर्ति के लिए यह यज्ञ किया जाता है। इसलिए स्वामी जी ने इस यज्ञ को प्रतिवर्ष करना शुरु किया। यह यज्ञ उन्हें सबसे प्यारा था। नाना विध विरोधो के बाद भी उन्होंने अपने जीवन काल में इसे जारी रखा। जीवन के अंतिम क्षणों में मेरे बेटे को व मुझे अपने सामने बिठाकर स्वामी जी ने आगे भी इसे जारी रखने का हमसे वचन लिया था। यह बात अलग है कि उसके कुछ ही दिनों के बाद बेटा चला गया। ठीक दो महीने के बाद स्वामी जी भी चले गए। व्यथा व पीड़ा की स्थिति में मैंने पूज्य स्वामी जी को दिए वचन को निभाया । मई में बेटा गया, अगस्त में पूज्य स्वामी जी चलते बने। अक्तूबर महीने में हमने स्वामी जी के अभाव में पहला दुर्लभ शारद यज्ञ किया। स्वामी जी के जाने के बाद दो दुर्लभ शारद यज्ञों को आप सभी के सहयोग से सफल किया। आप लोगों का सहयोग न होता तो कैसे श्रम साध्य, व्यय साध्य इन यज्ञों को कर पाता। आप लोगों का सहारा न होता तो महान आघात व व्यथा से पीड़ित मैं और मेरा परिवार, संस्था के सभीजन कैसे उठ खड़े होकर इन कार्यों को कर पाते।

प्रियजनों कष्टकारी व्यथा से भरे विगत दो वर्षो में संस्था में जो भी हो पाया है उन सबका श्रेय आप लोगों को भी जाता है। हम लोग तो निमित हैं अस्तु आप लोगों के सहयोग व सहारे से उत्साहित हो, इस वर्ष भी 18 सितम्बर से 22 सितम्बर तक मठ के वार्षिक यज्ञ के आयोजन का साहस जुटा पा रहा हूँ और आप लोगों से भी हर प्रकार के सहयोग की अभिलाशा रखता हूँ। साथ ही इस महान यज्ञ में शामिल होने के लिए, आप लोगों को सादर आमंत्रित भी कर रहा हूँ। यह भी तो एक शिष्टाचार है अन्यथा संस्था तो आप लोगों की ही है। सज्जनों 18 सितम्बर 2017 से 20 सितम्बर 2017 तक मठ का वार्षिक उत्सव जिसमें पूज्य स्वामी सवितानन्द जी महाराज (झारखण्ड वाले) के ब्रह्मत्व में किए जाने वाले यज्ञ से देवो का पूजन होगा। पितरो का तर्पण होगा। पवित्र वेद की ऋचाओं का गान किया जाएगा। महामनीशी तपस्वी, चिन्तक, विचारक पूज्य स्वामी आर्यवेश जी महाराज के इन यज्ञों से सम्बन्धित सरल व सारगर्भित उपदेशों की गंगा प्रवाहित होगी। यह दोनों ही तपस्वी संत पूज्य स्वामी जी के बहुत ही आत्मीय व प्रिय पात्र रहें। स्वामी सवितानन्द जी तो उनके शिष्यों में से एक मात्र संन्यासी शिष्य हैं, और दोनों ही महापुरुषों का भरपूर आशीर्वाद मुझे प्राप्त है। इन्हीं के संरक्षण व मार्ग दर्शन में यहां के सब कार्य चल रहें हैं। एक तरह से स्वामी जी के बाद इन्हीं दोनों महा तपस्वी सन्तों ने इस संस्थान को सम्भाल लिया है। सूक्ष्म जगत में दिवंगत पूज्यजनों के व स्थूल जगत में इन दोनों पूज्यजनों के आशीर्वाद व इनकी छत्र–छाया में यह संस्थान गतिशील व सुरक्षित है।

21 सितम्बर 2017 प्रातः साढ़े छः बजे 6:30 से दुर्लभ शारद यज्ञ इन्हीं महापुरुषों के ब्रह्मत्व व सुरक्षा घेरे में आरम्भ हो जाएगा। जो कि भगवती ऊशा देवी के रुप में अपनी लालिमा को बिखेरने वाले सूर्य भगवान की वन्दना कर आगे बढ़ेगा। पलों, मिन्टों, फिर घंटों से गुजरता हुआ यह मध्याह्न को, फिर संध्या बेला में सूर्य देव के अस्ताचल को जाने के बाद शाम को, शाम से रात्री के प्रथम द्वितीय प्रहरों से गुजरता हुआ ब्रह्मबेला में प्रवेश करेगा । पुनः ऊशा काल में अमोघ आशीर्वादों की वर्षा करने वाले देवों ,पितरों, दिव्यात्माओं के साथ पुलकित व हर्षित सूर्य भगवान के दर्शनों के बाद अनवरत चलता हुआ ठीक प्रातः 10 बजे विश्रान्ति को प्राप्त करेगा। 22–9–2017 प्रातः इस यज्ञ की पूर्णाहुति हो जाएगी। इस यज्ञ में ऋग्वेद की ऋचाओं से आहुतियॉ समर्पित की जाएगी। महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय की छात्र–छात्राएं व स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मंड़ल के सदस्य व दयानन्द संस्कृत महाविद्यालय के स्नातक बारी–बारी से ऋचाओं का पाठ करेंगें। मध्य में महागायत्री के गायन के साथ भी आहुतियॉ दी जाएगी। बीच–बीच में 15–15, मिन्टों के लिए दोनों ही सन्यासियों का, आचार्य महावीर सिंह का यज्ञ सम्बन्धित उपदेश तथा श्री संदीप आर्य पानीपत, श्री हरीशमुनी सुन्दरनगर, श्री हेमराज जी अमृतसर, कुमारी डिम्पल व शिष्य मडंली आदर्श विद्यालय, श्रीमति सरस्वती देवी जी, श्रीमति रुकमणी देवी जी, श्री भगवती प्रशाद जी पन्त यह सब भी अपने संगीत की झंकारों से यज्ञ के सुन्दर वातावरण को झंकृत करेगें। अपनी स्वर लहरियों से माहौल को मनमोहक, रोमांचित व भावुक बना देगें । सज्जनों यज्ञ में प्रचुर मात्रा में दी गई घृत सामग्री पुष्टीकारक, मिष्ठान युक्त उत्तम पदार्थों की आहुतियों से अत्यधिक तृप्त देवों के झरते हुए आशीर्वादों में नहाने के लिए अवश्य आप लोग इस यज्ञ में आए। पूरी आस्था व निष्ठा से यज्ञ में भाग लेकर सफल मनोरथ होकर जाएं।

बन्धुओं श्रद्धा से ओतप्रोत होकर जितनी आस्था व निष्ठा से आप लोग यज्ञ वेदी में अपने–अपने भाग को ग्रहण करने के लिए उपस्थित दिव्यात्माओं को देवों व पितरों को हव्य प्रदान करोगे। जिन–जिन कामनाओं व इच्छाओं को लेकर उनके चरणों मे, उनकी छाया में बैठोगे, आपकी दी आहुतियों से परम तृप्ति को प्राप्त वे देव जन द्रवित होकर आप की उन–उन कामनाओं को उन–उन इच्छाओं को पूर्ण कर देगें। यह सुनिश्चित समझो मनु जी महाराज कहते हैः–

येन 2 हिभावेन यद् यद्दानम् प्रयच्छतिं।
तत् तत्तेनेवभावेन प्राप्नोति प्रतिपूजितः।।

अर्थात जिस–2 भाव से जो–जो दान दिया जाता हैं अथवा यज्ञाग्नि में आहुतियां दी जाती हैं। उसी भाव के अनुरुप ससम्मान उसकी कामनाएं, उसकी इच्छाएं पूर्ण होती हैं । यज्ञ का, दान का, फल उसे प्राप्त होता है। मनु जी महाराज फिर कहते हैः–

स्वाध्याये नित्य युक्तः स्याद दैवेचैवेह कर्मणि।
देवकर्माणि युक्तो युक्तो हि विभर्तीदं चराचरम।।

मनुष्य को स्वाध्याय व देवकर्म में यानि अग्नि होत्र, यज्ञ कर्म में नित्य युक्त रहना चाहिए, संलग्न रहना चाहिए। यानि इन कर्मो को करते रहना चाहिए। जो व्यक्ति यज्ञकर्म में लगा होता है वह इस चराचर जगत् को तृप्त करता है, उसका पोषण करता है। वह कैसे मनु जी पुनः कहते हैः–

अग्नौ प्रस्ताहुतिः सम्यग् आदित्यमुपतिश्ठते।
आदित्याज्जायते वशिष्ठः वृष्टेरन्नं ततः प्रज्ञाः।।

अग्नि में डाली गयी आहुति सूर्य को पहुंचती हैं। सूर्य से वृष्टि होती है। वृष्टि से अन्न होता है और अन्न से प्राणी उत्पन्न होते हैं। इसलिए यज्ञ ही संसार का कारण हैं । अतः यज्ञ श्रेष्ट व महान कल्याणकारी कर्म है। और फिर जिस स्थान पर महान तपस्वी सन्तों, ऋषियों और मुनियों ने गहन साधना की हो। परम तप तपा है, बड़े–बड़े यज्ञों के अनुष्ठान किया हो, जिनके कारण वह स्थान तीर्थ बन गया हो, ऐसे स्थानों में जाकर यज्ञानुष्ठानों को करना उनमें भाग लेना सत्वर लाभकारी व महान कल्याणकारी होता है। चम्बा नगरी में दयानन्द मठ की पवित्र धरा पर परम तपस्वी सन्त पूज्य चरणों ने महान तप तपा है। महान साधक पूज्य स्वामी जी ने गहन साधना की है। बहुत बड़े याजक उस यज्ञ पुरुष ने बड़े–बड़े दीर्घ सत्रीय यज्ञों का अनुष्ठान किया हैं। इसलिए यह धरा भी पतित पावनी धरा हो गयी है। यहां का वातावरण पूत व पवित्र कर देने वाला है। इस धरा पर उस तपस्वी यज्ञ पुरुष के द्वारा यज्ञों व सत्संग की पावनी गंगा प्रवाहित की गयी। उसमें नहाने का, उसमें भाग लेने का अपना ही महत्व है। अतः इस यज्ञ में अवश्य आएं, इसमें भाग लें परम कल्याण होगा।

– दयानन्द मठ, चम्बा, हिमाचल प्रदेश

बंगाल में आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

पं. ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति तृतीय आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर 28 मई से 4 जून, 2017 तक आर्य समाज कलकत्ता 19, विधानसरणी में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री श्रीराम आर्य, प्रधान अतिथि आर्य समाज बड़ा बाजार के पूर्व प्रधान श्री खुशहालचन्द आर्य द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया।

शिविर में बंगाल, बिहार, झारखण्ड एवं कर्नाटक से 94 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

प्रसिद्ध उद्योगपति श्री श्रद्धानन्द अग्रवाल द्वारा शिविरार्थियों को आर्य साहित्य वितरित किया गया। प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुधीर जी आहुजा द्वारा शिविरार्थियों के भोजन में उदार सहयोग रहा। शिविर का आयोजन बंगीय वेद प्रचार सभा द्वारा किया गया। शिविर की संयोजिका श्रीमती अर्चना शास्त्री, शिविर अध्यक्ष पं. श्री सतीश चन्द्र मंडल, शिविर सचिव पं. वेद प्रकाश शास्त्री एवं पं. मधुसूदन शास्त्री, पं. अपूर्व देव शर्मा, आचार्य ब्रह्मदत्त का कार्यक्रम सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

– मंत्री, आर्य समाज कलकत्ता

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

श्रेष्ठ परम्पराओं की रक्षा करो

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि, ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धियाकृतान्।
अनुल्बणं वयत् जोगुवामपो, मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।।
ऋ० १०/५३/६

अर्थ : हे कर्मशील मनुष्य (रजसः) संसार का (तन्तुम्) ताना बाना (तन्वन्) बुनता हुआ भी (भानुम्) प्रकाश या सूर्य के (अन्विहि) पीछे चल, अनुसरण कर अर्थात् उसको आदर्श मानकर व्यवहार कर। (धियाकृतान्) बुद्धि द्वारा बनाये गये या परिष्कृत किए हुए (ज्योतिष्मतः) ज्योति से युक्त (पथः) मार्गों की (रक्ष) रक्षा कर अर्थात् ज्ञानयुक्त मार्गों पर चल। (जोगुवाम्) निरन्तर ज्ञान और कर्म अनुष्ठान करने वालों के अर्थात् विद्वानों और सामगान करने वाले लोगों के (अनुल्बणम्) उलझन रहित, यथोचित (अपः) कर्मों को (वयत्) विस्तृत करो, फैलाओ। (मनुः+भव) मनुष्य या मननशील बनो (दैव्यं जनम्) दिव्यगुण, कर्म, स्वभाव वाली संतान या समाज को (जनया) उत्पन्न करो।

इस वेदमंत्र में मनुष्य को समझाया और बताया गया है कि तू सांसारिक कर्त्तव्य कर्मों और व्यवहारों को ठीक प्रकार चलाने के लिए सूर्य का अनुकरण कर, उसको अपने जीवन का आदर्श मानकर ज्ञान–युक्त कर्म करता हुआ चल।

मनुष्य जीवन की सफलता और इसके उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कितना सुन्दर मार्ग वेद ने दर्शाया है कि जीवन एक तन्तु है। जिस प्रकार जुलाहा कपड़ा बुनने के लिए ताना–बाना तानकर अपना कार्य आरम्भ करता है इसी प्रकार मनुष्य अपने जीवन में अनेक कार्यों का ताना–बाना बुनकर कार्य चलाता है। जीवन में अनेक प्रकार के कर्मों और संस्कारों के सूत ओत–प्रोत हैं। इसलिये वेद ने जीवन को तन्तु और मनुष्य को उसका तन्तुवाय कहा है। मनुष्य का जीवन भी एक यज्ञ है और मन की सूक्ष्म प्रवृत्तियाँ उस यज्ञ का ताना–बाना हैं। मनुष्य जीवन का यह ताना–बाना किसी भी प्रकार बंद नहीं किया जा सकता। बहुत से लोग या मत–मतान्तर दूसरे लोगों को यह शिक्षा देते फिरते हैं कि सांसारिक धंधों को करने की कोई आवश्यकता नहीं "ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या" केवल ब्रह्म ही सत्य है और संसार का झगड़ा झूठा है। इससे अलग होकर बैठ जाओ, गुरुओं की सेवा करो तथा काम करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन लोगों से पूछो कि तब जीवन निर्वाह कैसे चलेगा और उस ब्रह्म की प्राप्ति भी बिना ज्ञान के कैसे हो पाएगी?ब्रह्मप्राप्ति के लिए ज्ञान अर्जित करना और उस मार्ग पर चलना भी तो बहुत बड़ा और कठिन कार्य है। वेद का दृष्टिकोण स्पष्ट है कि 'तन्तुं तन्वन्' अर्थात् अपना जो कर्त्तव्य कर्म है उसको ठीक प्रकार पूरा करते हुए आप जिस वर्ण या आश्रम में हैं, उसके धर्म को पूरी तरह निष्ठापूर्वक निभाते हुए अपने सामाजिक धर्म और व्यवहारों को ठीक प्रकार चलाते हुए अपना जीवन यापन करो। परन्तु इस जीवन यज्ञ में कोई आहुति बिना वेद मंत्र बोले ही न आहुत हो जाये इसके लिए एक काम करना कि (रजसो भानुमन्विहि) आकाश के सूर्य को अपने जीवन का आदर्श मानकर उसके अनुसार काम करना। सूर्य की भांति तप–त्याग, परिश्रम तथा ज्ञान के प्रकाश से तेजस्वी बनकर संसार के अज्ञानरूपी अंधकार को हरते चले जाना। अज्ञान और विषय–वासनाओं के चक्र में फंस कर वेद–मार्ग की राह मत भुला देना।

सूर्य नियमित रूप से ठीक समय पर उदित होता है और निश्चित समय पर ही अस्त होता है, हम भी अपने जीवन में प्रत्येक कार्य निश्चित समय पर करने का अभ्यास करें, अर्थात् अपनी जीवन पद्धति नियमित बनायें।

सूर्य से हम परोपकार और समानता का व्यवहार सीखें। हमारे भू–मण्डल का सारा कार्य व्यवहार उसी के ऊपर आधारित है। संसार के सभी जीव–जन्तुओं और वनस्पति आदि को उसी से जीवन मिलता है। सूर्य की भांति हमारा जीवन भी संसार के सभी जीव–जन्तुओं का जीवन दाता अर्थात् सहारा देने वाला हो। हमारी प्रेरणा से उनके जीवन में नव–जीवन का संचार हो। सूर्य की **(जिस प्रकार अपने घरों, सड़कों और मार्गों को हम बार-बार साफ करते हैं फिर भी कई बार उनमें कूड़ा-कर्कट, ईंट-पत्थर या रेत मिट्टी रह जाती है। इसी प्रकार धर्म-मार्ग में भी काम करते समय ईर्ष्या-द्वेष छल-कपट, स्वार्थ और भ्रष्टाचार रूपी कंकर-पत्थर रुकावट डाला करते हैं।)** किरणें संसार को रोग के कीटाणुओं से रहित कर देती हैं, ऐसे ही हम वैदिक ज्ञान के प्रकाश द्वारा संसार के अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट करते चले जायें जिससे वैदिक ज्ञान का उदय होता चला जाये।

सूर्य सदैव अपनी परिधि में घूमता है हम भी मानवता रूपी परिधि में रह कर सब कार्य करें, सूर्य को अपने जीवन का आदर्श बनायें। यह तभी संभव हो सकता है जब हम स्वयं को तप, त्याग और ज्ञान–विज्ञान तथा वैदिक साधना द्वारा ज्योतिर्मय कर लेते हैं क्योंकि एक प्रज्ज्वलित दीपक अनेक बुझे हुए दीपकों को जलाकर ज्योति प्रदान कर सकता है परन्तु हजारों बुझे हुए दीपक एक बुझे हुए दीपक को भी प्रज्ज्वलित नहीं कर सकते। "भानुमन्विहि" का यही अर्थ है कि हम संसार में सूर्य की भांति ज्ञान शिखर पर रहकर अपने द्वारा अर्जित वेद–ज्ञान द्वारा संसार को वेद–ज्योति से ज्योतिर्मय करते चलें तथा अज्ञान रूपी तिमिर को नष्ट कर डालें।

मंत्र का अगला वाक्य कितने महत्व का है, विचार करें–

"ज्योष्मितःपथो रक्ष धियाकृतान्"

अर्थात् बुद्धि द्वारा बनाये गये प्रकाश मार्गों की रक्षा कर। कैसा ज्ञान है वह?बुद्धि से परिष्कृत किया हुआ, ऋषियों द्वारा प्रदत्त और ज्योति से युक्त ज्ञान मार्गों पर चल कर उसकी रक्षा करें। जैसे सूर्य अपने तेज से भौतिक जगत् को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार विद्वान्, बुद्धिमान और ज्ञान लोग अपनी बुद्धि के प्रकाश से ज्ञान मार्गों को प्रशस्त करते हैं। कैसा है वह ज्ञान?वह ज्ञान कोई साधारण ज्ञानी नहीं है। परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान जो सृष्टि के आरंभ में ऋषियों के हृदय में दिया गया और उन्होंने उस ज्ञान को अपनी बुद्धि द्वारा संसार के कल्याणार्थ जन–जन तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है। ऐसे

– अध्यापक देवराज आर्य

उपयोगी और सर्वहितैषी ज्ञन की हम रक्षा करें और उसको प्रसारित करने का पूर्ण यत्न करें। कैसे हो इस वेद के ज्ञान का प्रचार–प्रसार?बुद्धि द्वारा वेद–शास्त्रों को पढ़ने, उनकी शिक्षाओं पर आचरण करने, अपना कुछ समय कर्त्तव्यभाव से समाज में वेद प्रचार हेतु लगाने से इस वेद ज्ञान की रक्षा तथा प्रचार–प्रसार हो सकता है। इसके लिए ईर्ष्या–द्वेष, छल–कपट का त्याग तथा तीनों ऐषणाओं से दूर रह कर तप, त्याग एवं कर्त्तव्यपालन को प्राथमिकता देनी पड़ेगी। महर्षि दयानन्द ने ज्ञानमार्गों की रक्षा के लिए आर्य समाज के तीसरे नियमोद्देश्य में लिखा है 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'

आत्मचिन्तन करके देखें, अपने मन में बुद्धिपूर्वक विचार करें, क्या हम इस नियम या किसी भी नियम की ठीक प्रकार पालना कर रहे हैं?जब हम वेद का पढ़ना–पढ़ाना जो कि परम–धर्म हमारे लिये लिखा है, उसको ही जीवन में नहीं उतार सके तो वेद–विद्या के ऊपर आचरण कैसे होगा और आठवें नियमानुसार अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि कैसे हो जायेगी?जब यह सब कुछ नहीं कर सकते तो "ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धियाकृतान्" का नारा सार्थक नहीं हो सकता। यही कारण है कि आज समाज आगे बढ़ने की अपेक्षा ज्ञान मार्गों की रक्षा और ज्ञान का प्रचार करने के स्थान पर ऐषणाओं में उलझ गया है। चारों वर्ण और चारों आश्रम धन और मान के पीछे अपनी पूरी शक्ति के साथ लगे हुए हैं।

मान लीजिए आपने किसी धार्मिक कार्य जैसे वेद–प्रचार, अनाथ–पालन, गौरक्षा, राष्ट्र उत्थान, धर्मार्थ औषधालय अथवा मानवता के हितार्थ दान देना प्रारम्भ किया है, आपके दान देने की प्रक्रिया किसी कारण बंद हो गई है। परन्तु आपने दान देने की ऐसी श्रेष्ठ परम्परा आरम्भ कर दी जो भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को लाभान्वित करती रहेगी एवं उनके लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनी रहेगी जैसे दानवीर भामाशाह देश, धर्म, जाति की रक्षा के लिए दान की तथा महाराजा प्रताप मान और सम्मान की परम्परा छोड़ गये जो आने वाली संतान के लिये प्रकाश स्तम्भ का काम करेगी।

जिस प्रकार अपने घरों, सड़कों और मार्गों को हम बार-बार साफ करते हैं फिर भी कई बार उनमें कूड़ा-कर्कट, ईंट-पत्थर या रेत मिट्टी रह जाती है। इसी प्रकार धर्म-मार्ग में भी काम करते समय ईर्ष्या-द्वेष छल-कपट, स्वार्थ और भ्रष्टाचार रूपी कंकर-पत्थर रुकावट डाला करते हैं।

महर्षि दयानन्द ने घोर तप, त्याग और कठिन परिश्रम से प्राप्त सदियों से लुप्त वेद ज्ञान के कोष को संसार के समक्ष रखकर सदा सदा के लिए वेद ज्योति के प्रकाश से मानवता को जगमग कर दिखाया। उन्हीं की प्रेरणा से दीर्घकाल से सोई आर्य जाति जागी और अपने आपको पहचाना। सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर और इस महान ग्रंथ से प्रेरणा लेकर कितने आर्य वीरों ने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिये हँसते–हँसते अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। कितने वीर और वीरांगनाएँ भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिए अपना जीवन बलिदान कर राष्ट्र की रक्षा और सम्मान हेतु 'ज्योति पथ' की राहें निश्चित करके चले गये। वेद मंत्र यही शिक्षा दे रहा है कि ज्ञान–विज्ञान, वेद सूत्रों और प्रकाश के मार्गों की अपनी बुद्धि के द्वारा रक्षा करो।

मंत्र में आगे कहा गया है कि –: अनुल्बणं वयत जोगुवामपो :– जीवन रूपी ताना–बाना बुनते समय जो तन्तु टूट जायें उन्हें पुनः जोड़ लेना चाहिये। यदि जोड़ते समय बीच में गांठ पड़ जाये तो कोई बात नहीं, अपनी ज्ञान ज्योति का क्रम जारी रखना चाहिये। जिस प्रकार अपने घरों, सड़कों और मार्गों को हम बार–बार साफ करते हैं फिर भी कई बार उनमें कूड़ा–कर्कट, ईंट–पत्थर या रेत मिट्टी रह जाती है। इसी प्रकार धर्म–मार्ग में भी काम करते समय ईर्ष्या–द्वेष, छल–कपट, स्वार्थ और भ्रष्टाचार रूपी कंकर–पत्थर रुकावट डाला करते हैं। ज्ञान और सहनशीलता सहित कर्त्तव्यपथ पर चलते हुए, श्रेष्ठ कामों को दूषित करने वाले लोगों से बचकर, ज्ञानमार्गों की रक्षा करते हुए आगे बढ़ते चले जायें। जिन प्राचीन वैदिक प्रथाओं को हम भूल गये हैं उन्हें पुनः जाग्रत करने की विशेष आवश्यकता है।

"अनुल्वणम्" विद्वानों और सामगान करने वाले ऋषियों के उलझन रहित अर्थात् यथोचित कर्मों को, ज्ञान–विज्ञान को आगे बढ़ाओ। जो श्रेष्ठ वैदिक कार्य ऋषि, मुनि, महात्मा लोग ज्ञानमार्गों की रक्षा के लिए करते आये हैं, उन यज्ञीय और परोपकारमय कर्मों को हम भी निःस्वार्थ भाव से लोकहित के लिये करने में अपने आपको समर्पित कर दें। 'परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्' निष्कामभाव से प्राणीमात्र की सेवा करने में कहीं भी कोई उलझन पैदा नहीं होती। जितनी भी उलझनें पैदा होती हैं, वे सब स्वार्थ के कारण होती हैं।

महर्षि दयानन्द ने अत्यन्त उलझे हुए ज्ञानमार्ग को समझने के लिए कठोर परिश्रम और रात दिन तप करके वैदिक ज्ञान प्राप्त किया। शिक्षा पूरी हो जाने पर गुरु दक्षिणा के रूप में अपना सारा जीवन ही गुरु के अर्पण कर दिया तथा अपना सम्पूर्ण जीवन, बल, बुद्धि और ज्ञान–संसार को वैदिक ज्योति से ज्योतिर्मय करने के लिए समर्पित कर दिया। सदियों से लुप्त हुए वैदिक ज्ञान को संसार के समक्ष प्रस्तुत कर प्रसारित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। गुरु के समक्ष की प्रतिज्ञा को पूर्ण रूपेण निभाया।

अपने जीवन की कोई परवाह न करते हुए वैदिक ज्ञान की रक्षा और प्रचार–प्रसार को अपना परम धर्म समझते हुए, अन्त में 'हे ईश्वर! तेरी इच्छापूर्ण हो' कहते हुए अपने जीवन की आहुति देकर संसार के लोगों को वेद–पथगामी बना गये।

एक नहीं, अनेकों ऋषि, महात्मा, विद्वान्, राष्ट्रभक्त, दानी और वीर अपने–अपने क्षेत्र में हमारा मार्ग–दर्शन करके चले गये। अब यह हमें देखना है कि हम इन ज्ञान–मार्गो की रक्षा करने और ऋषियों मुनियों के ऋण से उऋण होकर अपना कर्त्तव्य पालन करने में कहां तक सफल होते हैं।

'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् :– मंत्र का अन्तिम भाग मनुष्य को 'मनुष्य' मननशील बनने और दिव्य गुण, कर्म, स्वभाव वाली संतान उत्पन्न करने अथवा श्रेष्ठ, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्यनिष्ठ एवं वेदपथ पर चलने वाले समाज के निर्माण की योजना पर चलने के लिए प्रेरित कर रहा है। मंत्र का यह बहुत महत्त्वपूर्ण भाग है।

वेद कहता है 'मनुष्य बनो' परन्तु लोगों के सामने जब यह बात कहते हैं तो वे उत्तर देते हैं कि संसार में लोगों की क्या कमी है। इस धरती पर वर्तमान समय में पाँच अरब के लगभग जनसंख्या है। क्या आपको इनमें कोई मनुष्य ही नहीं दिखाई देता?मैंने बैठ कर विचार किया तो मनुष्य एवं पशु में स्पष्ट अन्तर दिखाई देने लगा। किसी कवि ने इस विषय में कहा है–

येषां न विद्या न तपो न दानं,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

जिन लोगों का मन विद्या में रत नहीं है अर्थात् जो व्यक्ति विद्या के स्वरूप को न जानकर केवल अक्षर ज्ञान में रत होकर अपने आपको विद्वान समझते हैं और ब्रह्मप्राप्ति के साधन कुछ भी नहीं करते, वेद शास्त्रानुकूल जिनका आचरण नहीं, आत्मकल्याण के मार्ग का जिनको पता नहीं, विद्या पढ़कर जिसने इहलोक और परलोक का सुधार नहीं किया, विद्या के द्वारा जिन्होंने तीन अनादि पदार्थों को जानकर मानव जीवन के परम उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का यत्न नहीं किया तो मनुष्य होने का अर्थ ही क्या है?

उक्त गुणों के बिना मनुष्य रूप में पशु ही धरा धाम पर विचरण कर रहे हैं। हम इन गुणों के आधार पर मनुष्य और पशु में विश्लेषण करें तो मनुष्यता का परिणाम कितने प्रतिशत आयेगा?जब परिणाम ही मनुष्यता का संतोषजनक नहीं है अर्थात् हम मानवीय गुणों में फेल हैं तो धर्म कौन करेगा?और धर्म के बिना सुख कहाँ से आयेगा?इसी आधार पर मंत्र में कहा गया है कि 'मनुर्भव अर्थात् हे मनुष्य यदि तू सुख, शांति, आनन्द और मोक्ष चाहता है तो मानवता के मार्ग पर चलना आरम्भ कर दें। इसी में तेरा कल्याण है।

"जनया दैव्यं जनम्" वेद मंत्र के इस वाक्य द्वारा पूर्णतः यह समझाया गया है– कि पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति हेतु संसार का ताना–बाना बुनते हुए अर्थात् अपने दैनिक कार्यों को ठीक–ठीक धर्मपूर्वक करते हुए, सूर्य का अनुकरण करना। ज्ञान मार्गों की रक्षा करना। श्रेष्ठ काम करने वाले लोगों के कर्मों को आगे बढ़ाने का पूरा प्रयत्न करना। ये सभी कार्य मनुष्य बनकर चलने से ही होंगे इसलिये जीवन में मानवता धारण करके चलना। परन्तु एक बात पर विचार कर कि जिन कल्याणकारी कर्मों को करने की तूने प्रतिज्ञा की है, तेरे संसार से चले जाने के बाद इन ज्ञान तन्तुओं को कौन विस्तृत करेगा, इस ज्ञान गंगा को कौन बहायेगा?कौन चलायेगा इस दुनिया को वेदमार्ग पर?इसके लिए एक काम करना 'जनया दैव्यं जनम्" अर्थात् दिव्य गुण, कर्म, स्वभावयुक्त संतान उत्पन्न करके जाना अर्थात् श्रेष्ठ गुणों वाले समाज का निर्माण करना, जिसका लक्ष्य मानवता को सत्य, अहिंसा, परोपकार, तप और कर्त्तव्यपालन के मार्ग पर आरूढ़ करना हो। आज मनुष्य–मनुष्य के साथ जितना छल–कपट, अत्याचार और स्वार्थपूर्ण व्यवहार कर रहा है इतना तो कोई पशु भी नहीं करता।

प्राचीन इतिहास का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि जब तक आर्य–जाति इस मंत्र पर विचार करके संसार को धर्म–मार्ग दिखाती रही तब तक भारत संसार का गुरु कहलाया। जरा रामायण काल को देखें, राम की महानता किस बात में थी?राम की महानता 'मर्यादापालन' और 'धर्मपालन' में थी। उन्होंने केवल अपने ही कुल की मर्यादा को कायम नहीं रखा अपितु संसार के सम्मुख एक आदर्श आज्ञाकारी, तपस्वी, त्यागी पुत्र, विशालहृदय भाई, विश्वासी मित्र, निर्लोभी शासक एवं दुष्ट दलनकारी क्षत्रिय के रूप में आने वाली पीढ़ियों के लिए अमरता का दीपक जला दिया, जिसके दिव्य प्रकाश में हम युग–युग तक अपने जीवन की राहें निश्चित करते रहेंगे।

इसी प्रकार श्रीकृष्ण के जीवन की महानता 'योग' में थी। वे महान् योगीराज, कुशल राजनीतिज्ञ, पापियों के दलनकर्ता, निरभिमानी, निर्भीक, दूरदर्शी एवं सफल प्रशासक थे। उन्होंने उस समय अनेक छोटे–छोटे राज्यों में बिखरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का पूर्ण प्रयत्न किया।

महर्षि दयानन्द के उपकारों को हम कभी नहीं भुला सकते और उनके ऋण से कभी उऋण भी नहीं हो सकते। महर्षि ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु घोर तप, त्याग एवं परिश्रम किया। संसार को सदियों से भूले वैदिक ज्ञान से ज्योतिर्मय कर गये। किसी कवि ने सच कहा है कि–

सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार फना होंगे,
अहसान दयानन्द के फिर भी न अदा होंगे।

अतः हम सबका कर्तव्य है कि ऋषियों द्वारा बताये ज्ञान मार्गो की रक्षा करते हुए 'मनुर्भव' के नारे को जीवन में सार्थक करें।

–आर्य टैंट हाऊस, रोहतक मार्ग, जीन्द

ऋषि दयानन्द और आर्य समाज की देश की आजादी में भूमिका

— मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द (1825–1883) के समय में देश एक ओर जहां अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, मिथ्या परम्पराओं व अनेकानेक सामाजिक बुराईयों से ग्रस्त था वहीं दूसरी ओर इन्हीं कारणों से वह विगत सात सौ से कुछ अधिक वर्षों से पराधीनता के जाल में भी फंसा हुआ था। ऋषि दयानन्द वेदों के उच्च कोटि विद्वान व सृष्टि के आदि काल से आरम्भ ऋषि परम्परा के योग्यतम प्रतिनिधि भी थे। वह राष्ट्र कि सच्चे पुरोहित एवं सभी देशवासियों के आचार्य, कर्तव्य व आचरण की शिक्षा देने वाले, गुरु भी थे। उनके सामने देश को अविद्या, अज्ञान व पाखण्डों से दूर करने की चुनौती थी और साथ ही देश की पराधीनता को भी समाप्त करना उनको अभीष्ट था। उन्होंने विचार कर देश से अविद्या व अन्धविश्वासों को दूर करने के कार्य को प्राथमिकता दी और सन् 1863 में वेदों का प्रचार, असत्य का खण्डन और सत्य का मण्डन करना आरम्भ कर दिया। धर्म विषयक सभी विषयों पर वह स्थान स्थान पर जाकर प्रवचन दिया करते थे और लोगों का शंका समाधान भी करते थे। शंका समाधान सुनकर व प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर पठित, शिक्षित व निष्पक्ष लोगों की सन्तुष्टि हुआ करती थी और उनमें से कुछ उनके अनुयायी बन जाते थे। पौराणिक हिन्दुओं की जिन प्रमुख मान्यताओं का वह खण्डन करते थे उनमें मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, बाल विवाह, बेमेल विवाह, जन्मना जातिवाद मुख्य थे वहीं सबको उन्नति के समान अवसर देने वाली गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था का समर्थन भी वह करते थे। वेद विरोधी व मिथ्या परम्पराओं के समथर्कों को शास्त्रार्थ की चुनौती भी दी जाती थी। स्वामी जी ने अनेक मतों के विद्वानों से भिन्न भिन्न विषयों पर शास्त्रार्थ किये। सबसे मुख्य शास्त्रार्थ मूर्तिपूजा पर वाराणसी में 16 नवम्बर, सन् 1869 को काशी के राजा श्री ईश्वरीय प्रसाद सिंह की अध्यस्थता में हुआ था। इस शास्त्रार्थ में स्वामी जी अपने वैदिक पक्ष को प्रस्तुत करने वाले अकेले विद्वान थे जबकि पौराणिक मूर्तिपूजक विद्वानों की संख्या 30 से अधिक थी। श्रोताओं के रूप में भी लगभग 50 हजार की जनसंख्या शास्त्रार्थ स्थल आनन्दबाग में उपस्थित थी। इस शास्त्रार्थ का निर्णय स्वामी दयानन्द जी के पक्ष में हुआ था। कालान्तर में स्वामी जी ने अपने विचारों को अनेक ग्रन्थों के माध्यम से प्रस्तुत किया। संस्कृत व हिन्दी में ऋग्वेद (आंशिक) तथा यजुर्वेद के सम्पूर्ण भाष्य सहित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, गोकरूणानिधि, व्यवहारभानु आदि उनके कुछ प्रमुख ग्रन्थ हैं। उनके यह सभी ग्रन्थ **'भूतो न भविष्यति'** की उपमा को चरितार्थ करते हैं। 10 अप्रैल, सन् 1875 को स्वामी जी ने मुम्बई में वेदों के प्रचार व प्रसार के लिए **'आर्यसमाज'** नामक संगठन स्थापित किया। सच्ची आध्यामिकता के प्रचार, समाज सुधार, पाखण्ड व अन्धविश्वासों का निवारण, देश में शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु डी.ए.वी. स्कूल तथा गुरुकुलों की स्थापना तथा देश की आजादी में उनकी व उनकी अनुयायी संस्था आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका है।

ऋषि दयानन्द के समय देश अंग्रेजों का गुलाम था। अंग्रेज देशवासियों का शोषण व उन पर अत्याचार करते थे। देश व देशवासियों की उन्नति के मार्ग बन्द थे। आजादी की बात करना अपनी मृत्यु को दावत देना था। कोई उचित मांग करने व गलत नीतियों का विरोध करने पर वह उसे सहन नहीं कर पाते थे। सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में देशवासियों का अमानवीय उत्पीड़न किया गया था। लोगों को ईसाई बनाने का षडयन्त्र भी किया जाता था। यह वह काल था जब आजादी का आन्दोलन आरम्भ नहीं हुआ था और न ही देश में आन्दोलन का कहीं वातावरण ही था। कांग्रेस की स्थापना भी सन् 1885 में हुई। इससे 22 वर्ष पूर्व ही ऋषि दयानन्द ने वेद प्रचार करना आरम्भ कर दिया था। सन् 1874 में उनके एक भक्त राजा जयकृष्ण दास ने उन्हें अपने प्रमुख व सभी विचारों का ग्रन्थ लिखने की प्रेरणा की जिससे वह लोग भी लाभान्वित हो सके जो उनके उपदेश सुनने आ नहीं पाते। ऐसे ग्रन्थ से वह लोग भी लाभान्वित हो सकते थे जो बहुत दूर रहते थे तथा सत्य धर्म व सत्य परम्पराओं को जानने के इच्छुक थे। ऐसे अनेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्वामी दयानन्द जी ने सन् 1874 में सत्यार्थप्रकाश नामक अपना प्रमुख ग्रन्थ लिखा जिसका कुछ समय बाद सन् 1875 में प्रकाशन हुआ। इसका संशोधित संस्करण सन् 1883 में तैयार किया गया। 30 अक्तूबर, सन् 1883 को स्वामी जी की एक षडयन्त्र के अन्तर्गत मृत्यु के कारण संशोधित सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन सन् 1884 में हुआ। अपने इस ग्रन्थ में स्वामी जी ने कहीं स्पष्ट व कहीं संकेत रूप में देश की आजादी की चर्चा कर देशवासियों को देश को आजाद कराने के लिए प्रेरित किया।

अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में स्वदेशी राज्य वा स्वराज्य का स्पष्ट रूप से उल्लेख कर विदेशी राज्य को माता–पिता के समान कष्पा, न्याय व दया तथा पूर्ण निष्पक्ष होने पर भी उसके स्वराज्य वा स्वदेशी राज्य के समान न होने की घोषणा कर उन्होंने आजादी की नींव रख दी थी, ऐसा हम अनुभव करते थे। यह बता दें कि उस समय स्वदेशी राज्य व स्वराज्य की कहीं चर्चा नहीं की जा रही थी। इन शब्दों का इतिहास में पहली बार प्रयोग उन्हीं के द्वारा हुआ है। वह लिखते हैं **'अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त (भारत) में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय, राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाकान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है।'** इसके बाद उन्होंने जो लिखा है स्वर्णिम अक्षरों में लिखने योग्य है व एक प्रकार से देश को आजाद कराने का एलान है। वह लिखते हैं **'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत–मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं हैं।'** इन पंक्तियों में स्वामी दयानन्द जी ने स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि उत्तम बताया है और कहा है कि अंग्रेजों के राज्य में अनेक गुण होने पर भी उनका राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है। यहां संकेत रूप में वह देशवासियों को पूर्ण सुख की प्राप्ति के लिए स्वदेशी राज्य की स्थापना के लिए प्रयत्न वा आन्दोलन की प्रेरणा करते हुए प्रतीत हो रहे हैं।

स्वामी दयानन्द जी के अन्य सभी ग्रन्थों में भी देश के स्वाभिमान वा आत्म गौरव को जगाने के लिए प्रचुर सामग्री मिलती

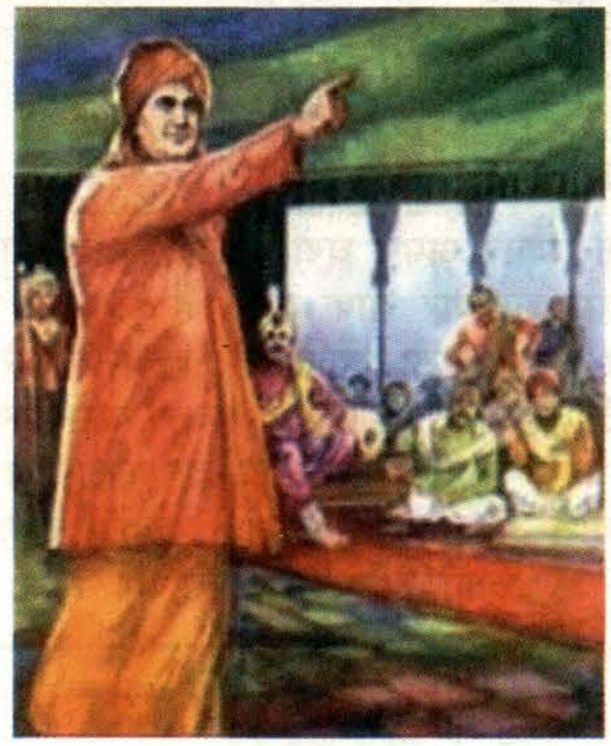

है। लेख की सीमा के कारण सबका उल्लेख नहीं किया जा सकता। उनके ग्रन्थों से कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं। सत्यार्थप्रकाश में वह लिखते हैं कि **'यह आर्यावर्त (भारत) देश ऐसा देश है जिसके सदृभय भूगोल में दूसरा कोई देश (इंग्लैण्ड, अमेरिका व अन्य भी) नहीं है। इसीलिये इस (आर्यावर्त देश की) भूमि का नाम सुवर्णभूमि है क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसीलिये सृष्टि की आदि में (1,96,08,53 हजार वर्श पूर्व) आर्य लोग (तिब्बत से सीधे) इसी देश में आकर बसे। (सृष्टि का आदि काल होने से यह सारा स्थान व देश खाली पड़ा था, कोई मनुश्य यहां रहता नहीं था, यह आर्य ही आदिवासी थे जिन्होंने इस आर्यावर्त वा भारत देश को बसाया, इनसे पूर्व अन्य कोई आदिवासी यहां बसता वा रहता नहीं था)। इसीलिए हम (ऋषि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के) सृष्टि विषय में कह आये हैं कि आर्य नाम उत्तम पुरुषों का है और आर्यों से भिन्न मनुष्यों का नाम दस्यु है। जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी (आर्यावर्त भारत) देश की प्रशंसा करते हैं और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिस को लोहेरूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।'** इन पंक्तियों में स्वामी दयानन्द जी ने भारत को विश्व का सबसे उत्तम देश बताया है और कहा है कि विदेशी (अंग्रेज आदि) इसके स्पर्श से अर्थात् संगति से धनाढ्य हो जाते हैं। इन पंक्तियों का उद्देश्य देशवासियों के आत्म गौरव को जगाना था। हमने पहली बार जब इन पंक्तियों को पढ़ा था तो हमने भी आत्मगौरव व रोमांच का अनुभव किया था।

ऋषि दयानन्द देश को आजाद कराने के लिए देशवासियों में आत्मगौरव में और वृद्धि करने के लिए यह भी बताते हैं कि सृष्टि के आरम्भ से पांच सहस्र वर्ष पूर्व महाभारतकाल पर्यन्त भारत वा आर्यावर्त देश का ही समस्त भूमण्डल पर सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि राज्य था। सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में उनके शब्द हैं **'सृश्टि (के आरम्भ) से ले के पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अन्य देशों में माण्डलिक अर्थात् छोटे–छोटे राजा रहते थे क्योंकि कौरव पाण्डव पर्यन्त यहां के राज्य और राजशासन में सब भूगोल के सब राजा और प्रजा चले थे।'** वह यह भी कहते हैं कि महाराजा युधिष्ठिर जी के राजसूय यज्ञ और महाभारत युद्ध पर्यन्त यहां के राज्य के आधीन सब राज्य थे। यह इसलिए लिखा है जिससे देशवासी यह जान सकें कि अंग्रेजों की गुलामी तो दो सौ वर्ष से भी कम समय से है जबकि हमारे पूर्वजों ने तो पूरे विश्व पर 1.96 अरब वर्ष तक सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य किया है।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में ही एक प्राचीन ग्रन्थ **'मैत्रयुपनिशद'** का प्रमाण देकर बताया है कि सष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारतपर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्यकुल में ही हुए थे। **अब इनके सन्तानों का अभाग्योदय होने से राजभ्रश्ट होकर विदेशियों (अंग्रेजों) के पादाकान्त हो रहे हैं।** जैसे **यहां सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलयाश्व, यौवनाश्व, वद्धयश्व, अश्वपति, भाषविन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीश, ननक्तु, भार्याति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन, मरुत और भरत सार्वभौम सब भूमि (विश्व) में प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजाओं के नाम लिखे हैं** वैसे स्वायम्भुवादि चक्रवर्ती राजाओं के नाम स्पष्ट मनुस्मषति, महाभारतादि ग्रन्थों में लिखे हैं। इस को मिथ्या करना अज्ञानी और पक्षपातियों का काम है। इसकी कहीं कोई चर्चा नहीं करता। कम्युनिष्ट इतिहासार न करें, परन्तु भारतीय मनीषियों को तो इसका ज्ञान होना चाहये और मीडिया में भी देशवासियों को इसकी जानकारी दी जानी चाहिये। आत्मगौरव में वषद्धि का यह भी एक महत्वपूर्ण कारक है। स्वामी दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में एक महत्वपूर्ण बात यह भी कही हैं **'परदेशी (अंग्रेज व अन्य विदेशी विधर्मी) स्वदेश में व्यवहार वा राज्य करें तो विना दारिद्रय और दुःख के दूसरा कुछ भी (परिणाम) नहीं हो सकता।'**

ऐसे अनेक प्रमाण स्वामी दयानन्द जी के सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, संस्कृत वाक्य प्रबोध आदि ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं। यह सब लिखने के पीछे उनका उद्देश्य यही स्पष्ट जान पड़ता है कि वह देशवासियों को यह सब तथ्य बता कर विदेशी राजनैतिक परतन्त्रता को दूर करने की ओर अग्रसर कर रहे थे। स्वामी जी के जीवनकाल व उसके बाद उनके यह क्रान्तिकारी विचार उनके सहस्रों व लाखों अनुयायियों व कुछ इतर देशवासियों में भी पहुंचे थे। योगी अरविन्द ने भी स्वामी दयानन्द जी को पढ़ा था। अतः इन विचारों का प्रभाव देशवासियों पर पड़ा। ऋषि दयानन्द जी की मष्त्यु हो जाने के बाद आचर्यसमाज को स्वतन्त्रता आन्दोलन का नेतष्त्व करना चाहिये था परन्तु ऐसा लगता है कि उनसे यह चूक हो गई। जो भी हो, आर्यसमाज के अनुयायियों ने आजादी के आन्दोलन को अपने कार्यों व बलिदानों से पोषित किया। देश की आजादी के आन्दोलन में सक्रिय लोगों में प्रायः सभी आर्यसमाजी किसी न किसी रूप में जुड़े होते थे। यहां तक कहा जाता है कि आजादी के आन्दोलन में 80 प्रतिशत लोग आर्यसमाजी थे। यह भी बता दें कि महादेव रानाडे और पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा स्वामी दयानन्द जी के दो प्रमुख शिष्य थे। रानाडे जी के शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले जी थे और उनके महात्मा गांधी। इसी प्रकार क्रान्तिकारियों के आद्य गुरु व आचार्य पं. श्यामजी कष्ण वर्मा थे जिन्होंने इंग्लैण्ड में 'इण्डिया हाउस' की स्थापना की थी। प्रायः सभी क्रान्तिकारी वहां रहा करते थे। वीर सावरकर जी व अन्य प्रमुख क्रान्तिकारी भी इण्डिया हाउस में ही रहते थे। आजादी के प्रमुख राष्ट्रीय नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द जी, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगतसिंह जी का पूरा परिवार स्वामी दयानन्द का अनुयायी था। इ न कुछ उदाहरणों व चर्चा से स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज का देश की आजादी में प्रमुख योगदान था। आज भी आर्यसमाज देश व समाज हित अनेकानेक काम कर रहा है। यदि सारा देश आर्यसमाज की विचारधारा को स्वीकार कर ले तो यह देश व पृथिवी सुख का धाम बन सकती है।

सत्यार्थप्रकाश में ऋषि दयानन्द ने योगेश्वर कृष्ण जी की प्रशंसा करते हुए कहा है कि यदि वह सचमुच होते तो वह अंग्रेजों के धुर्रे उड़ा देते। सम्भवतः उनकी मृत्यु के कारणों में से एक कारण सत्यार्थप्रकाश में विदेशी राज्य के विरुद्ध लिखे उनके शब्द हो सकते हैं। स्वामी दयानन्द मूर्तिपूजा–कृष्ण–अंग्रेज प्रसंग में लिखते हैं कि 'जब संवत् 1916 के वर्ष में (सन् 1857 के स्वातन्त्र्य समर में) तोपों के मारे मन्दिर की मूर्तियाँ अंग्रेजों ने उड़ा दी थीं तब मूर्ति कहां गई थी? प्रत्युत बाघेर लोगों ने जितनी वीरता की और लड़े, शत्रुओं को मारा, परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्री कृष्ण के सदृश कोई (बुद्धिमान, क्षत्रिय योद्धा) होता तो इनके (अंग्रेजों के) धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते। भला यह तो कहो कि जिस का रक्षक (कृष्ण जी की मूर्ति) मार खाय उस के शरणागत (कृष्ण जी के भक्त) क्यों न पीटे जायें? इसी के साथ लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

— पताः 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001
मोः–9412985121

ओ३म् का जाप और स्वास्थ्य विज्ञान

–आचार्य पं. विभुमित्र शास्त्री

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" के प्रारम्भ में लिखा है कि "ओ३म् यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक (ओ३म्) समुदाय हुआ है इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं। जैसे अकार से विराट, अग्नि और विश्वादि, उकार से हिरण्य गर्भ, वायु और तेजसादि, मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है।" वेदों और शास्त्रों में भी ओ३म् नाम की महिमा वर्णित है। वेद में "ओ३म् एवं ब्रह्म" वाक्य आया है, अर्थात् परमात्मा का नाम ओ३म् है। वह आकाश की तरह व्यापक है। ओ३म् सार्थक शब्द है, जो रक्षा करता है, उसे ओ३म् कहते हैं– अवतीत्योम्। छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है कि "ओम् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता, उसी की उपासना करनी योग्य है, अन्य की नहीं– "ओमित्येतदक्षरमुदीथमुपासीत।"

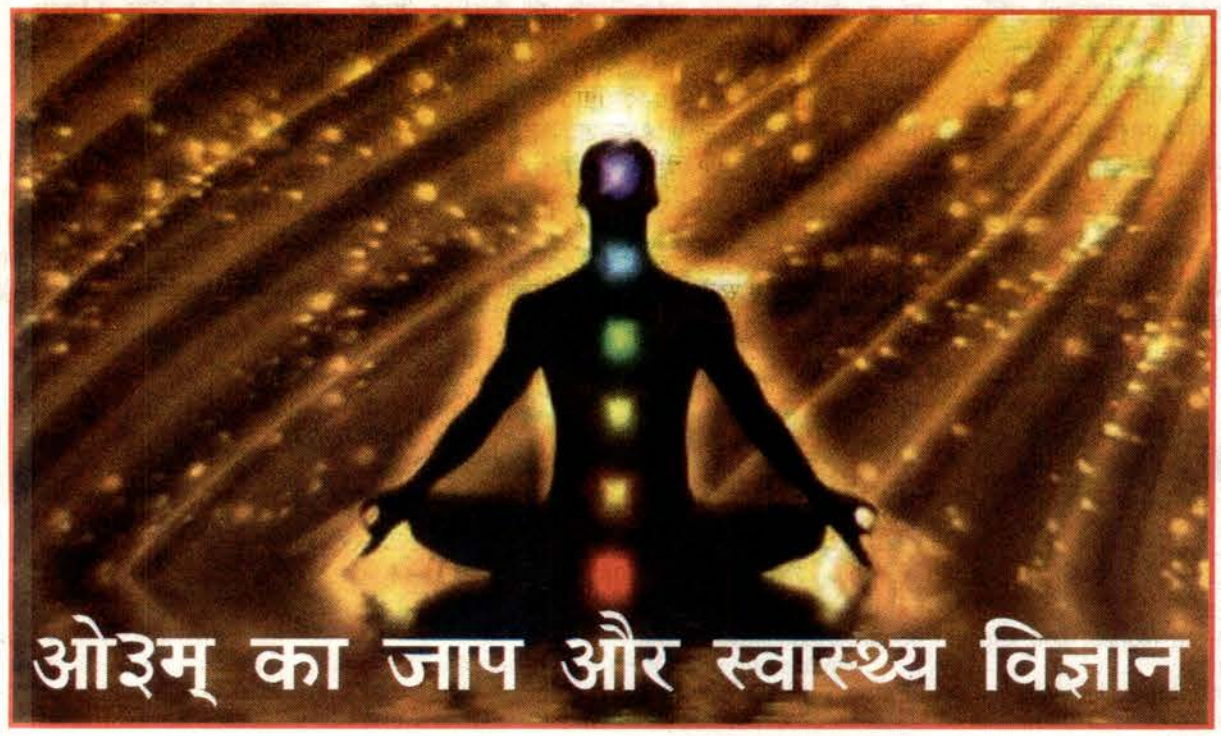

योगदर्शन में इसी ओ३म् नाम को "प्रणव" (ओंकार) कहा गया है– "तस्य वाचकः प्रणवः"। श्रीमद् भगवद् गीता में ओ३म् नाम की महिमा वर्णित है:–

ओंतत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिता पुरा।।
तस्मादोमित्यु दाहृत्य यज्ञदानतपः क्रियाः।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ता सततं ब्रह्मवादिनाम्।।

नाम और नामी का सम्बंध अनादि और घनिष्ठ है। इसी कारण शास्त्रों में नाम जप की बड़ी महिमा है। योग शास्त्र में "तज्जपः तदर्थ भावनम्" कहा गया है, जिसका अर्थ है प्रणव अर्थात् ओ३म् का जप और उसके सार्थक स्वरूप का चिन्तन करना। ईश्वर स्वरूप को बार–बार आवृत्ति करना ही जप है। जप ईश्वर प्रणिधान का साधन है– क्योंकि चंचल मन की एकाग्रता करने में सहायक है और इससे मानसिक शुद्धि होती है। इसीलिए मनुस्मृति में जप यज्ञ को विधि यज्ञ से दस गुणा श्रेष्ठ कहा गया है– "विधि यज्ञाज्जप यज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः।" महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की साधना में जप को प्रथम स्थान दिया है– "अनेन जपोपासनादि कर्मणा धमार्थ काम मोक्षाणा सधः सिद्धिर्भवेन्नः"। पूर्व के आर्यजन भजन गाते हुए कहते थे कि–

"ओ३म् के जप से हमारा ध्यान बढ़ता जायेगा।
अन्त में यह जाप हमको मुक्ति तक पहुँचायेगा।।"

इस ओ३म् जाप को अब आध्यात्मिक लाभ की दृष्टि से ही नहीं अपितु शारीरिक स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से भी देखा जा रहा है। मेडिकल साइंस अब उन बीमारियों का इलाज ढूँढ रहा है– जिससे आधुनिक दवाएँ हार चुकी हैं। विज्ञान पत्रिका 'साइंस" में अभी हाल ही में एक शोध प्रकाशित हुआ है, जिसमें कहा गया है कि ओ३म् एक ऐसा शब्द है, जिसका अलग–अलग आवृत्तियों से रक्तचाप, दिल दिमाग, पेट और खून से जुड़ी हुई कई बीमारियों के इलाज में चमत्कारिक असर दिखा सकता है। यहाँ तक कि सेरीब्रल पैल्सी–जैसी असाध्य बीमारी में भी ओ३म् के उच्चारण से उपचार की संभावना बढ़ सकती है। दिल और दिमाग के रोगियों पर किये गये परीक्षण के विषय में उक्त पत्रिका में उल्लेख है कि रिसर्च एण्ड एक्सपेरिमेन्ट इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो सांइसेज के एक दल ने उक्त रोगों के विषय में शोध किया है और बहुत कुछ नई जानकारी प्राप्त की है। दल के प्रमुख प्रोफेसर जे. मॉर्गन के अनुसार उनके दल ने सात साल तक दिल और दिमाग के रोगियों पर परीक्षण किया और परीक्षण में देखा गया कि ओ३म् का अलग–अलग आवृत्तियों में और ध्वनियों में नियमित रूप से किया गया जाप काफी असरकारी है। ओम् का उच्चारण पेट, सीने और मस्तिष्क में एक कंपन पैदा करता है, जो शरीर की मृत कोशिकाओं के निर्माण में सहायक होता है। ओ३म् का जप मस्तिष्क से लेकर नाक, गला, फेफड़े तक के हिस्से से बड़ी तेज तरंगों का वैज्ञानिक रूप से संचार करता है।" परीक्षण के लिए मस्तिष्क और हृदय के विभिन्न रोगों से ग्रस्त २५०० पुरुषों और २००० महिलाओं को चुना गया, जिसमें से कुछ लोग बीमारी के अन्तिम चरण में पहुँच चुके थे। प्रो० मॉर्गन की टीम ने धीरे–धीरे उन लोगों को मिलने वाली बाकी दवाइयों को बंद कर वही दवाएँ जारी रखी जो जीवन बचाने के लिए जरूरी थीं। परिणाम चौंकाने वाला था। डाक्टरी निरीक्षण में उक्त रोगियों ने प्रतिदिन सुबह छह से सात बजे तक एक घंटे तक विभिन्न आवृत्तियों में ओ३म् का जाप किया। इसके लिए योग्य प्रशिक्षक भी रखे गये। हर तीन माह पर इन लोगों का शारीरिक परीक्षण करवाया गया। चार साल बाद सामने आये परिणाम आश्चर्य जनक थे। ७० फीसदी पुरुष और ८५ फीसदी महिलाओं को नब्बे फीसदी राहत मिली। प्रतिदिन ओ३म् के उच्चारण से अधि संख्यक रोगियों के स्वास्थ्य में काफी सुधार एवं दवाओं का असर भी बढ़ा।

ओम् का पहला जिक्र वेदों में मिलता है और ब्रह्माण्ड का कारण माना जाता है– "ओं खं ब्रह्म"। भगवद् गीता में इसी प्रणव (ओ३म्) को मनुष्यों के शरीराकाश में भी व्याप्त माना गया है– "प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु"। शरीराकाश से ही विभिन्न ध्वनियों का तथा प्रामाण, अपान, व्यान, उदान, समान– जैसे पंच प्राणों का संचरण होता है– जो स्वास्थ्य और आयु का कारण बनता है। इन पंक्तियों का लेखक स्वयं हृदय रोगग्रस्त है और पटना स्थित इन्दिरा कार्डियोलोजी हॉस्पिटल में सप्ताहों भर्ती रहा। वहाँ के निदेशक डॉ० एस.एन. मिश्रा ने तत्रत्य डाक्टरों से कई प्रकार की जांच करायी, कई बार ई०सी०जी० हुई और "इको" के द्वारा हृदय की रक्त धमनियों की सही स्थिति की जानकारी ली गई। वह स्क्रीन पर भी दिखायी गई– जिसे मैंने स्वयं और डाक्टरों की टीम के साथ वहीं कार्य करने वाली मेरी बड़ी पुत्री प्रतिभा कुमारी ने भी साश्रुनयनों से देखा और सब कुछ देखकर डाक्टरों के विचार से निदेशक ने सिरयस्ली समझ कर कारोनरी वायपास सर्जरी के लिए दिल्ली के अपोलो अस्पताल में रेफर कर दिया और कहा कि यहीं जो भी इलाज संभव था किया गया। आप दिल्ली जाये। मैं अपनी शारीरिक और आर्थिक स्थिति से लाचार होकर चिकित्सार्थ दिल्ली न जा सका और अपने स्वाध्याय तथा स्वामी रामदेव जी से प्रेरणा पाकर ओ३म् जाप और प्राणायाम करने की ओर अग्रसर हुआ। आज छह साल से अपने सरस्वती भवन स्थित यज्ञशाला में बैठकर तथा कभी काल एकान्त नदी तट पर बैठ कर ओ३म् जप के साथ प्राणायाम करता आ रहा हूँ और अब बहुत कुछ स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर चुका हूँ। इस बीच मेरा ध्यान मनुस्मृति के उस श्लोक की ओर भी गया जिसमें जाप के साथ तीन महाव्याहृतियों का उल्लेख है– "एतदक्षरमेतांच जपन् व्याहृति पूर्विकाम्।" मैंने व्याहृतियों के साथ ओ३म् का जप और प्राणायाम करना शुरू किया और लाभ संतोषप्रद रहा। वस्तुतः तीन अक्षरों वाले ओम् (अ+उ+म्) के साथ तीन महा व्याहृतियों (भूः, भुवः, स्वः) का जप भी यदि प्राणायाम के साथ होता है, तो निश्चित ही प्राणापानादि शारीरिक वायु के संचरण से स्वास्थ्य में सुधार होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी संध्या की पुस्तक में इसीलिए प्राणायाम के मन्त्रों में महाव्याहृतियों का उल्लेख किया है, जो वैज्ञानिक सूझ है।

इस ओ३म् शब्द को लोग ओम्, ओ३म् (प्लुत) और तान्त्रिक या यौगिक रूप में लघुरूप देकर ॐ के रूप में भी लिखते हैं। यौगिक प्रक्रिया में जाकर वस्तुतः ओ३म् शब्द एकाक्षरी हो जाता है। शायद इसीलिए गीता में इसे एकाक्षरी कहा गया है– "ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन्" इत्यादि। इस ॐ की व्याहति प्राणायाम के समय श्वासों के वहिःसरण और अन्तः सरण के समय आसानी से किया जा सकता है। त्रयक्षरी ओ३म् और तीन व्याहृतियों के जाप से नाभि से लेकर मस्तिष्क की धमनियाँ जहाँ सामान्य होने लगती हैं– रक्त प्रवाह सामान्य होने लगता है, वहीं हृदयस्थ धमनियों की रुकावट भी धीरे–धीरे ठीक होने लगती है। इंटरनल ऑटोनोमिक नर्व्स पर असर पड़ने लगता है और दोनों की गतिविधियाँ कम हो जाती हैं। एंग्जाइटी, डिप्रेशन और रक्तचाप कम हो जाता है, व्यक्ति शान्ति महसूस करने लगता है। बीमारियों का निवारण आसान हो जाता है। हाँ, ओ३म् जाप और प्राणायाम क्रिया के साथ ही साथ युक्ताहार विहार का होना आवश्यक है और इस प्रकार का योग (ओ३म् का जप प्राणायाम तथा युक्ताहार विहार का संयोग) जीवन में शारीरिक दुःखों का निवारक हो जाता है–

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्ठस्य कर्मसु।
युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःख हा।।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

आर्य समाज शकरपुर ने किया भव्यता के साथ वेद प्रचार

दिल्ली की प्रसिद्ध आर्य समाज, आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली–92 में वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत दिनांक 12 से 15 अगस्त, 2017 तक वेद प्रचार का भव्य आयोजन किया गया। इससे पूर्व दिनांक 7 अगस्त, 2017 को श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में विशेष यज्ञ किया गया तथा यज्ञोपवीत परिवर्तन के साथ हैदराबाद सत्याग्रह के शहीदों को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गई। 12 अगस्त से प्रारम्भ हुए वेद प्रचार कार्यक्रम के अवसर पर चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रातः 7.30 से 9.00 बजे तक प्रतिदिन वेद के चुने हुए मंत्रों से आहुतियाँ अर्पित की गई तथा विद्वानों के द्वारा वेदों की महत्ता पर प्रकाश डाला गया। 15 अगस्त जन्माष्टमी पर्व के अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य ओमवीर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न कराई गई। अपनी विद्वतापूर्ण यज्ञीय व्याख्या से उन्होंने श्रद्धालुओं को भाव–विभोर कर दिया। प्रतिदिन रात्रि में आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नन्दलाल निर्भय जी द्वारा भजनोपदेश तथा प्रसिद्ध विद्वान पं. भूदेव शास्त्री जी के ओजस्वी प्रेरणादाई प्रवचन होते रहे। 15 अगस्त को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री मनोहर लाल छावड़ा जी की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में पं. नन्दलाल निर्भय, पं. भूदेव शास्त्री तथा आचार्य ओमवीर शास्त्री जी ने भगवान श्रीकृष्ण के वैदिक स्वरूप का दिग्दर्शन कराया तथा देश को उन्नत करने के सूत्र बताये। अत्यन्त आकर्षक तथा पूर्ण उत्साह के साथ आयोजित इस कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज के प्रधान श्री मिश्रीलाल गुप्ता, मंत्री श्री पतराम त्यागी, कोषाध्यक्ष श्री राकेश शर्मा ने अथक प्रयास किया। इनके अतिरिक्त श्री वेद प्रकाश वानप्रस्थी, श्री नन्द कुमार वर्मा, श्री ओम प्रकाश रूहिल, श्री रमेश भटनागर, श्री महेन्द्र सचदेव, श्री प्रभुदयाल सचदेव, श्री सोमदत्त आदि का भी सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

– पतराम त्यागी, मंत्री आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली–92

महाराष्ट्र में आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता श्री जगदीश सूर्यवंशी जी का असामयिक निधन

औरंगाबाद, महाराष्ट्र में आर्य समाज के स्तम्भ तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य तथा सभा के कार्यों में विशेष रुचि रखने वाले श्री जगदीश सूर्यवंशी जी का दिनांक 11 अगस्त, 2017 को हृदय गति रूक जाने के कारण निधन हो गया। पिछले कुछ समय से उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। उनका अन्तिम संस्कार इसी दिन स्थानीय श्मशान घाट में सैकड़ों व्यक्तियों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उनके निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि जगदीश सूर्यवंशी हमारे विशिष्ट सहयोगियों में से थे और उनके निधन से महाराष्ट्र आर्य समाज में बड़ी रिक्तता पैदा हो गई है। जिसकी पूर्ति करना निश्चय ही कठिन होगा। उन्होंने सम्पूर्ण आर्य समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दिवंगत की सद्गति तथा इस असह्य कष्ट में डूबे हुए परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से धैर्य तथा शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

DAILY PRAYER

bY

Mahatma Narayan Swami

Ethical Value of Prayer

Man is considered to be the highest and loftiest creation in the scale of evolution.

He is born to perform duties in distinguishing him from animals at every step. These duties are three-fold.

1. Man's duties towards himself.
2. Man's duties towards others.
3. Man's duties towards God.

All These duties are epitomised in the "Daily Prayer" called the Brahma Yajna or Sandhya, which he is enjoined to perform twice daily, in the morning and evening, to give expression to his innermost feelings, hankerings and longings Prayer is, as a matter of fact, a universal instinct. It appears as if it has been wrought into human nature. Man prays because he cannot help praying. He derives out of prayer a certain satisfaction which he can derive from no other human activity.

The greatest value of prayer lies in its educational and moral effect, in the spiritual discipline which is must to those who pray. Prayer is a blessing in itself. It is undoubtedly a means of devloping human beings in the highest and truest sense. perhaps, there is no means to moral culture superior to the belief in and exercise of prayer. One who prays earnestly does immediately feel within himself or herself the quickening and refining influence of prayer.

The Object to Prayer

The object of prayer is happiness. Man always hankers after happiness. But happiness is not the result of idle hankering it is an achievement through strenuous living of the life of a good citizen. Man strives for happiness. He makes it the goal of his ambition and activities. It is his Summum bonum. To this end he prays. The first hymn given below is a prayer to that end.

Prayerful Mood

prayerful mood is the result of the inner recognition of the limits of our own powers. Man is baffled by the buffets of this world. His difficulties drive him to despair. There are so many contradictions in his life that he in his individual capacity, finds himself unable to solve them. Downcast and depressed he turns round and tries. He knocks at the door of a Greater Self—the Supreme Being—the Almighty God Whom his faith prescribes to be shelter and refuge for all rejected and dejected human beings. This attitude induces a prayerful mood.

When you are going to sit down for prayer, see that you draw yourself, that spiritual pranayama, Consecrate yourself be filled with the presence of God. Yield yourself to Him not with a passive acquiesence, a sentimental quietism but with an earnest, energetic direction of all your faculties to achieve something supreme through your contact with the all-embracing Spirtual Presence. When you bring yourself in this mood, you acquire the right, the privilege and the incentive to prayer offered in this mood will be effective, fruitful and regenerative.

ACHMAN MANTRA

Prayer for Peace and Happiness

(Place some water in the right palm and after reciting the following mantra do achman (sip it). Do this three times).

1. Om shanno devi rabhishtaya apobhavantu pitaye Shanyo rabhisravantu nah.

May the supreme Being —the giver of light, the All-Pervading Lord, blissful to us in the attainment of our desired end, i.e. happiness! May He shower on us His Peace and Happiness !

In this hymn we have our goal before us. We picture before or mind's eye the object we pray for—the end that we strive to attain. But we know, Happiness does not come to us through idle wishing, through passive brooding or inactive longing. It is to be achieved through struggle, active striving and strenuous living. For that we need performance of certain duties-duties to ourselves and duties to other.

Man's Duties Towards Himself

Our duty to ourselves consists of the great preparation for the supreme goal.

Our 'self' of body, mind and spirit. It is spirit that functions through the body and mind. All our success in life depends upon this right and correct functioning which requires regular discipline both of body and mind. Body, as a matter of fact, is seat of mind and its health contributes to the health of mind itself. Body consists of sense organs and its health and efficiency means the health and efficiency of these sense-organs individually as we recite the following hymn, touching them, and think over how best we can utilise them in our personal service and in the service of our fellowmen around us.

Anga sparsha mantra

Prayer for Wellbeing and Strength

(Take some water in the left palm. Dip the two middle fingers of the right hand into the water and touch the respective organs as the following mantras are recited.

2. Om Vak vak (both sides of the mouth)
Om Pranah Pranah (both nostrills)
Om Chakshuh Chakshuh (both eyes)
Om Shrotram Shrotram (both ears)
Om Nabhih (naval cord)
Om hridayam (heart)
Om Kanthah (throat)
Om Shirah (head)
Om Bahubhyam Yashobalam (both Shoulders)
Om Karatalakara Prishthe (both plams, front and back)

Blessed be Thy name O Lord! May thou strengthen and bless my organs of speech, my respiratory system, my organs of sight and hearing, my centres of love, feeling and heart, my throat and brain, my arms and hands, both for personal end and for the good of my fellowmen amidst whom I live !

It is to be distincitly understood that happiness results from the proper use of the sense-organs. Their strength is therefore, the first condition of happiness. God is invoked in the above hymn to come to our aid and bless our organs. We have to mentally, go over each organ, think of its use and misuse with a view to adopt the former and avoid the latter.

MARJANA MANTRA

Prayer for Purity of Body

Next in order is the purificatory hymn. The recitation of which urges the devotee to rouse each sense-organ to its normal function or activity as it enjoins a prayer for the correct and right use of each bodily organ. One has always to remember that our miseries are of our own making and those who want to avoid them must first control their senses and guide them unto nobler, higher and purer purposes.

Take again some water in the left palm and, dipping the two middle fingers of the right hand, sprinkle water over the various organs with the recital of the undermentioned mantras as indicated hereunder).

3. Om Bhuh Punatu Shrasi (head)
Om Swah Punatu Kanthe (throat)
Om Mahah Punatu Hridaye (heart)
Om Janah Punatu Nabhyam (naval cord)
Om Tapah Punatu Padeyoh (feet)
Om Satyam Punatu Punah Shirast (head)
Om Kham brahma Punatu Sarvatra (the whole body)

May the Supreme Being, the Great Lord, the Source of Energy and Light, purity and strengthen my brain (powers of understanding), my eyes (powers of vision). my throat and my speech, my powers of heart, my procreative powers, my legs (feet) and the entire body to perform its no mal functions and activity in the service of Humanity !

The devotee is reminded in this hymn, that the body is the Temple of the Lord and its organs and powers are to kept in the highest efficiency. One is to devote his entire energy to the building up of a sound mind in a sound body. The secret of life lies in this and this alone Those who believe prayer to be a passive contemplation must understand that the Vedic prayer is active in its nature and prescribes a life of ceaseless activity both in his individual capacity and as well as in the capacity of his being a member of his community. Prayer, like education, aims at good citizenship.

In these hymns we pray for the strength of our bodily organs and also for their keeping in strict discipline Strength with discipline leads us to glory, but without discipline it drives us to despair and destruction. A man with strong and healthy organs can glorify God by leading a life of discipline and self-control. Injustice and tyranny are born of indiscipline But glory and good name come to those who make the best use of their strength under the laws of strict discipline and selfcontrol.

We pray to God to allow us a store of strength to strengthen these sense-organs and make them our allies. Our life should become miserable if our organs do not act as our allies but act as our enemies. Our hands and feet, our eyes and ears, while playing the role of an enemy bring havoc to us. Erring organs lead us hellward. While they act as our allies they lead us heavenward.

Our Prayer for bodily strength and vigour will be effective only when we see that :—

1. We keep our sense-organs strong and unerring.
2. We keep them always engaged in healthy activities.
3. We keep them pure and clean by withdrawing them from unclean and profane pursuits.

"भगवान श्रीकृष्ण ने अनीति के प्रतिकार का "महामंत्र" दिया

"भगवान श्री कृष्ण ऐसे जननायक थे जो जन–जन की श्रद्धा व भक्ति की चेतना केन्द्र में सर्वदा के लिए प्रतिष्ठित होकर आराध्य हो गये, नीति निष्णात् श्रीकृष्ण ने हमें अनीति के प्रतिकार का महामंत्र दिया। नित्य और अनित्य की व्याख्या करते हुए उन्होंने दार्शनिक दृष्टि को प्रतिपादन कर विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। उक्त विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश भारती ने काशी आर्य समाज में आयोजित श्रीकृष्ण जयन्ती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये।

यशस्वी आर्य विद्वान पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने कहा कि योगिराज श्रीकृष्ण ने अधर्म का उन्मूलन किया, उनसे प्रेरणा ग्रहण कर आतंकवाद मुक्त भारत की भावना को साकार किया जा सकता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ नेता श्री रमाशंकर आर्य ने बतलाया कि श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन वेदानुकूल था, उनके चरित्र को लांक्षित करने के विरुद्ध स्वामी दयानन्द ने प्रबल आवाज उठाई।

सामाजिक कार्यकर्ता लालाराम सचदेवा (पूर्व सभासद) ने कहा कि श्रीकृष्ण के विचारों को आत्मसात कर भारत विश्व गुरु के पद पर पुनः आसीन होगा।

अध्यक्षीय सम्बोधन में श्रीनाथ सिंह पटेल में कहा कि योगिराज श्रीकृष्ण ने लोक मानस का व्यामोह दूर कर धर्मपालन का संदेश दिया है। उनके कर्मयोग ज्ञानयोग को आत्मसात कर जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

जयन्ती समारोह के अवसर पर श्री रमेश जी आर्य मोती लाल आर्य ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति कर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। इस अवसर पर डॉ. विशाल सिंह, बृजभूषण सिंह, प्रतिभा सिंह, डॉ. गायत्री आर्या, राजकुमार विश्वकर्मा, विभा आर्या, हेमा आर्या, सत्यनिष्ठा आर्या, एस. एन. प्रसाद आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। संचालक प्रकाश नारायण शास्त्री तथा धन्यवाद प्रकाश डॉ. विशाल सिंह ने किया। **– श्री प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री**

माता–पिता की सेवा से होता है संतान का उद्धार

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में साप्ताहिक यज्ञ व भजन प्रवचन का आयोजन किया गया जिसके मुख्य यजमान निशान्त कालिया एवं श्रीमती प्रीति कालिया युगल नवदम्पत्ति व सुनयना शर्मा व रैना शर्मा ने श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की। वहीं यज्ञ के ब्रह्मा व मुख्य वक्ता आचार्य ज्ञान प्रकाश वैदिक ने कहा कि माता–पिता की सेवा से बढ़कर दुनिया में और कोई सेवा या पुण्य कर्म नहीं है। जिस सन्तान के उपर माँ–बाप की छाया है वह सन्तान भाग्यशाली है और वही व्यक्ति अपने जीवन में उन्नति के पथ पर आगे बढ़ता है जो अपने जीवित माता–पिता की सेवा सम्मान तथा उनकी आवश्यकताओं को पूरा करता है वह सन्तान सदा उन्नत और सुखी रहती है, जो माता–पिता की सेवा करती है। वहीं आर्य समाज मंदिर की सुप्रसिद्ध भजनोपदेशिका श्रीमती सोनू भारती ने ईश्वर भक्ति का भजन हम सब मिल के आए दाता तेरे दरबार, भर दे झोली तेरे पूर्ण भंडार भजन सुना कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने आए हुए सभी आर्यजनों का धन्यवाद किया।

कार्यक्रम में हर्ष लखनपाल, भूपेन्द्र उपाध्याय, अश्विनी डोगरा, सतपाल मल्होत्रा, केदारनाथ शर्मा, राजीव शर्मा, बलराज मिश्रा, रविन्द्र आर्य, राज कुमार सेठ, ईश्वर चन्द्र रामपाल, सुभाष आर्य, इन्दु आर्य, अनु आर्या, दिव्या आर्या, विजय कुमार चावला, संदीप अरोड़ा, चौधरी हरिचन्द, बैजनाथ, रेणु शर्मा, वंश आर्य, सुदर्शन आर्य, कुबेर शर्मा, नन्दनी शर्मा, अशोक शर्मा, रेखा शर्मा, अमन आर्य, सृष्टि आर्य, प्रवीण शर्मा, मोहन लाल, मनु आर्य, शारदा रानी, स्वर्ण शर्मा, श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा, सुनीता शर्मा, संदीप मल्होत्रा, निखिल लखनपाल, सुनील मल्होत्रा, संगीता मल्होत्रा, स्नेह लता कालिया, ललित मोहन कालिया, हिमांशु कालिया, सुभाष मेहता, ममता रानी, उमेश नारायण चौधरी, तिलक राज, उमा शुक्ला, तान्या आर्या, यशवी आर्य, सुरिन्द्र अरोड़ा, उर्मिल भगत, रानी अरोड़ा, अनिल मिश्रा, अर्चना मिश्रा व अन्य अनेक नगर निवासियों ने भाग लिया।

नशा परिवारों को बर्बाद करता है

पंजाब की धरती जिस पर पांच दरियाओं का पानी व्यक्ति को जीवन देता आया है, वहीं पर नशे के रूप में छठा दरिया पंजाब में मौत का तूफान लेकर आ गया। इस समय यह कैसे हुआ? क्यों हुआ? इस बहस में पड़ने का समय नही है क्योंकि अब तो पंजाब की 70 प्रतिशत जवानी चाहे वे लड़के हों या लड़कियाँ, इस नशे के जंजाल में फंस चुके हैं। अमीर परिवारों के बच्चे शौक से शुरू होकर इन नशे में इस तरह डूबे हुए हैं कि नशा पूरा करने के लिए वे कोई भी क्राईम करने को तैयार रहते हैं।

नशे के व्यापारियों को अपने बच्चों के भविष्य की फिक्र तक नहीं कि नशे की कमाई से पल रहे बच्चों का भविष्य क्या होगा। यह आग अगर उनके घर में लगी तो शायद उनको पता चले, तब तक बहुत देर हो जायेगी। पंजाब सरकार नशे पर काबू पाने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रही है तथा युवा पीढ़ी को मुख्यधारा के साथ जोड़ने का कार्य कर रही है।

समाज को नशे के प्रति जागरूक करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने एक कार्य योजना शुरू की है जिसके अन्तर्गत स्कूलों, कॉलेजों तथा आर्य समाजों में नशे के बारे में कार्यक्रम करके युवा पीढ़ी को जागरूक किया जा सके। इस सम्बन्ध में जालन्धर में दो कार्यक्रम आयोजित किये गये तथा आगे भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहेंगे।

श्री जगदीश सूर्यवंशी जी नहीं रहे

महाराष्ट्र – औरंगाबाद के हमारे आर्य परिवार के घनिष्ट साथी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरंग सदस्य, मेरे अपने विशेष सहयोगी श्री जगदीश सूर्यवंशी जी का आज प्रातः अपने निवास पर निधन हो गया। अभी 29 जुलाई 2017 को मैं उनके निवास पर उनसे मिलने गया था – उस समय भी उनका स्वास्थ्य चिंता जनक था।

उनकी पत्नी और पुत्र उनकी विशेष देखभाल कर रहे थे। एडवोकेट शिवजी शिंदे जिनके घर मैं रुका था वे भी पूरी तरह साथ थे। इन दोनों की जोड़ी हमारे सभी कार्य क्रमों में बहुत आगे बढ़कर भाग लेती रही हैं। पिछले महीने दोनों आचार्य सुभाष के एडसी गुरुकुल में 15 दिन के शिविर में साथ रहे। इस बीच उनके स्वास्थ्य में कुछ सुधार भी हो रहा था कि अचानक आज देहान्त हो गया। हम आर्य समाज, बंधुआ मुक्ति मोर्चा और सर्व धर्म संसद की ओर से जगदीश जी को हार्दिक श्रृद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनके शोक संतप्त परिवार को हम सब की ओर से हार्दिक संवेदना।

– स्वामी अग्निवेश

दिल्ली चलो युवको ॥ ओ३म् ॥ दिल्ली आओ आर्यो

जहां नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के ३९वें वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन के उपलक्ष्य में

राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन

रविवार, 3 सितम्बर 2017, प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक

स्थानः आर्य समाज, दीवान हाल,चांदनी चौक,दिल्ली-110006

कार्यक्रम

समारोह अध्यक्षः डा.अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष,ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

ध्वजारोहणः श्री परवीश महाजन (वरि.भाजपा नेता, जम्मू कश्मीर)

मुख्य अतिथि

स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद) श्री मनोज तिवारी (सांसद व प्रदेश अध्यक्ष,भाजपा)
डा.सत्यपाल सिंह (सांसद) श्री तरूण विजय (सांसद) श्री महेश गिरी (सांसद)

सान्निध्यः– श्री सुभाष आर्य (पूर्व महापौर,दक्षिण दिल्ली नगर निगम)

मुख्य वक्ताः स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

विशिष्ट अतिथिः–ठाकुर विकम सिंह जी (अध्यक्ष,राष्ट्र निर्माण पार्टी), श्री दर्शन अग्निहोत्री (प्रधान, वैदिक भक्ति आश्रम, देहरादून), श्री मायाप्रकाश त्यागी (कोषाध्यक्ष,सार्वदेशिक सभा), श्री राजीव कुमार (चेयरमैन,परम डेयरी ग्रुप), श्री नवीन रहेजा (चेयरमैन,रहेजा डवैलपर), श्री तिलक चांदना (सी.ए.), डा.लाजपतराय आर्य (करनाल),डा.डी.के.गर्ग (चेयरमैन, ईशांन इन्सीटियूट),श्री के.एल.पुरी,श्री अमरनाथ गोगिया, श्री यशपाल आर्य (पूर्व पार्षद), श्री कुलदीप लूथरा (प्रधान, हमदर्द सोसायटी जम्मू), वैद्य इन्द्रदेव जी, श्री प्रभात शेखर (मनोहरलाल ज्वैलर्स), श्री सुरेन्द्र कोहली (आजादपुर मन्डी), श्री ओम सपरा (मैट्रो पोलटेन मैजिस्टेस्ट्र), श्री रवि कप्तान (पार्षद), आचार्य रमेशचन्द शास्त्री (शिक्षाविद्), श्री योगेश आत्रेय (युवा नेता भाजपा), श्री आलोक शर्मा (पार्षद), श्री टी.आर.गुप्ता (जम्मू), श्री रवि देव गुप्ता, श्री मनोहर लाल चावला

युवा शक्ति को आशीर्वाद प्रदान करने साथियों सहित पधारें

निवेदक

आनन्द चौहान, संरक्षक | डा.अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष | महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय महामंत्री
धर्मपाल आर्य, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष | कृष्णगोपाल दीवान, स्वागताध्यक्ष | डा.रवि कान्त, स्वागत मन्त्री

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 18–19 अगस्त, 2017
प्रकाशन की तिथि : 17 अगस्त, 2017
वैदिक सार्वदेशिक
17 से 23 अगस्त, 2017
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

यज्ञ महिमा

**ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विप्रं पदमंगिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त।।**

—ऋ० १०/६७/२ ; अथर्व० २०/६१/२

ऋषिः—अयास्यः।। देवता—बृहस्पतिः।। छन्दः—निचृत्त्रिष्टुप्।।

विनय—'यज्ञ–यज्ञ' सब कहते हैं, परन्तु यज्ञ के मूलतत्त्व को जानने वाले कोई विरले ही होते हैं। हम तो इतना जानते हैं कि जगत्–हित के लिए स्वार्थत्याग के कार्य करना यज्ञ है। इतना ठीक भी है, परन्तु यज्ञ के प्रथम रूप से हम बहुत दूर हैं। यदि हमें कहीं वह रूप दीख जाए तब तो हम देख लें कि यज्ञ ही हमारा प्राण है, हमारा जीवन है; यज्ञ तो हमारे एक–एक श्वास में होना चाहिए। इस यज्ञ के 'प्रथम धाम' (मुख्य स्थान) को जो साक्षात् देख लेते हैं वे अंगिरस् कहाते है; क्योंकि ऐसे लोग इस जगत्–शरीर के अंगों के रस होते हैं। ये वे महात्मा पुरुष होते हैं जो संसार को ठीक रास्ते पर ले–जाते हुए संसार के प्राणरूप होते हैं। संसार में जो पाप, अधर्म और स्वार्थ की शक्तियाँ प्रवृत्त हो रही हैं उनसे संसार का जीवन–रस सूख जाए यदि ये 'अंगिरस्' उसमें निरन्तर धर्म–धारा न बहाते रहें। इन अंगिरसों को बार–बार प्रणाम है।

परन्तु हमें तो यह जानना चाहिए कि ये 'अंगिरस्' महात्मा कैसे बनते हैं? इनके लक्षण क्या हैं? इनके चार लक्षण हैं– (१) ये सत्य ही बोलते हैं, ये सत्य का ही वर्णन करते हैं। (२) केवल इनकी वाणी में ही सत्य नही होता किन्तु इनके ध्यान व विचार में भी कुटिलता नहीं आने पाती; इनके विचार में–मनमें–भी असत्यता नहीं आती (अतएव) इनकी बुद्धि इतनी सच्ची और प्रकाशपूर्ण होती है कि इन्हें समष्टि–बुद्धि–रूप जो 'द्यौ' है उसके पुत्र कहना चाहिए; और (३) ये वीर–पुत्र होते हैं, क्योंकि संसार सदा अज्ञान–शत्रु पर विजय पाने के लिए अग्रसर रहता है, (४) और ये 'द्यौ के पुत्र' अपने में 'विप्रपद' को, ज्ञानमय व्यापक पद को धारण किये होते हैं– भगवान् को, भगवान् के एक ज्ञानमय व्यापक रूप को, अपने में धारण किये फिरते हैं।

हे यज्ञकर्मों द्वारा ऊँचे चढ़ने की इच्छा रखने वाले और यत्न करने वाले भाइयो ! अंगिरसों के इन चार लक्षणों को अपने में रमाते चलो, रमाते हुए चढ़ते चलो।

शब्दार्थ—ऋतं शंसन्तः=सत्य ही कहने वाले, **ऋजुदीध्यानाः**=अकुटिल ध्यान करने वाले, **असुरस्य**=प्रज्ञावाले **दिवः**=दिव के, 'द्यौ' के **वीराः पुत्रासः**=वीर पुत्र, **विप्रं पदं दधानाः**=और जो ज्ञानमय या व्यापक पद को धारण किये हुए हैं, ऐसे **अंगिरसः**=अंगिरस लोग **यज्ञस्य प्रथमं धाम**=यज्ञ के परम मुख्य स्थान को **मनन्त**=जानते हैं।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

भारतीय संस्कृति के पुंज थे योगीराज श्रीकृष्ण

– ओम प्रकाश आर्य

अमृतसर :– 13 अगस्त, 2017, महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष रूप से हवन–यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य विद्यासभा, गुरुकुल कांगड़ी के प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य विशेष तौर पर उपस्थित हुए।

हवन–यज्ञ का शुभारम्भ आचार्य दयानन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में यजमान बने आदित्य, कुणाल पसाहन, कोमल, सुनीता पसाहन आदि ने पवित्र वेद मंत्रों से पवित्र अग्नि में आहुतियां डालकर श्रीकृष्ण जी के जन्मोत्सव मनाया।

तत्पश्चात् नरेन्द्र आर्य, सुलोचना आर्या, ऋचा वैद, राकेश आर्या ने प्रभु भक्ति के भजन एवं श्रीकृष्ण जी से सम्बन्धित भजनों को गाकर पूरे वातावरण को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर पर विशेष तौर पर उपस्थित मुख्य अतिथि श्री ओम प्रकाश आर्य ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि योगीराज श्री कृष्ण जी का जीवन पूर्ण रूप से यज्ञमय था और उन्होंने जीवन में तप, त्याग और समर्पण की भावना को लेकर अन्याय अत्याचार और शोषण के विरुद्ध काम करते हुए मानवता की सेवा के उद्देश्य से जीवन–यापन किया और समय–समय पर जनता में वेद के आधार पर ज्ञान की चर्चा करते हुए मानवता के लिए दुनिया में रहने का मार्ग दर्शन किया।

इस अवसर पर विजय कुमार आर्य, अशोक वर्मा, राज कुमार, कमलेश रानी, छवि गुप्ता, नीलम, पंकज, नम्रता, भूपेश, मोनिका, शशि अरोड़ा, अभिषेक आदि उपस्थिति थे। तत्पश्चात् प्रसाद वितरण किया गया।

– दयानन्द शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।